अध्याय–1

वित्तीय विवरण – I
(Financial Statements – I)

सीखने के उद्देश्य (Learning Objective) :

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

1. वित्तीय विवरणों की प्रकृति को समझ पायेंगे।
2. वित्तीय विवरणों का प्रयोग करने वाले पक्षकार और उनसे सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं को समझ पायेंगे।
3. पूँजी और आगम व्यय के मध्य अन्तर कर पायेंगे।
4. व्यापारिक व लाभ–हानि खाते को तैयार कर पायेंगे।
5. सकल लाभ, शुद्व लाभ और संचालन के लाभ की प्रकृति को समझ पायेंगे।
6. चिट्ठा / स्थिति–विवरण को तैयार करने की विधि को समझ पायेंगे।
7. स्थिति–विवरण में सम्पतियों एवं दायित्वों को लिखने का क्रम समझ पायेंगे।
8. एकांकी व्यापार मे व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता तथा स्थिति–विवरण बनाने की विधि को सीख पायेंगे।
9. प्रारम्भिक प्रविष्टियों को समझ पायेंगें।

विद्यार्थी शैक्षणिक वर्ष में विद्या अर्जन करता है। वर्ष के अन्त में शैक्षणिक परिणाम की जानकारी करने के लिए परीक्षा की तैयारी कर परीक्षा देता है। परीक्षा का परिणाम आने के पश्चात् अंक तालिका को देखकर वह भविष्य की योजना बनाता है। उसी प्रकार व्यापारी वर्ष पर्यन्त व्यापार करता है। वित्तीय वर्ष के अन्त में वह व्यापार के परिणाम की जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है कि उसे व्यापार से लाभ हुआ या हानि एवं व्यापार की आर्थिक स्थिति क्या है? व्यापारी व्यापार के व्यवहारों का लेखा सर्वप्रथम प्रारम्भिक बहियों में करता है। फिर उसकी खतौनी खाता बही में करता है। इसके पश्चात् खातों का शेष निकालकर उसकी सहायता से तलपट बनाता है। तलपट खतौनी की गणितीय शुद्वता की जॉच होती है परन्तु वांछित परिणाम की जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती है। वांछित परिणाम की जानकारी के लिए उसे तलपट की सहायता से अन्तिम खाते बनाने आवश्यक होते है। अन्तिम खाते दोहरा लेखा प्रणली की अन्तिम अवस्था (सांराश) है। जिन्हे वित्तीय विवरण पत्र कहा जाता है। व्यापारी वित्तीय वर्ष के अन्त में तलपट की सहायता से निम्नलिखित वित्तीय विवरण (Financial Statements) बनाता है –

1. आय विवरण पत्र :
   - (i) व्यापार खाता (Trading Account)
   - (ii) लाभ एवं हानि खाता (Profit and Loss Account)
2. स्थिति पत्रक (Statement of Affairs) या चिट्ठा (Balance Sheet)

वित्तीय विवरणों में रूची रखने वाले पक्षकार (Parties interested in financial Statements)

(1) उच्च प्रबन्ध (Top Management) : कर्मचारियों एवम् विभागों की क्षमता का मूल्यांकन करने, इन्हे प्रोत्साहित या इन पर नियंत्रण स्थापित करने, खर्चों पर नियंत्रण रखने एवम् लाभार्जन क्षमता मे वृद्वि करने के लिए वित्तीय विवरण

प्रबन्ध को आंकड़े उपलब्ध करवाते है। इन आंकड़ो की सहायता से प्रबन्ध भावी योजनाऐं आसानी से बना सकता है। पूॅजी, श्रम तथा माल का कुशलतम प्रयोग हो रहा है या नहीं इसकी जानकारी उच्च प्रबन्ध को वित्तीय विवरणों के माध्यम से ही प्राप्त होती है। इस प्रकार किसी व्यवसाय के संचालन एवम् नियंत्रण में वित्तीय विवरण उतने ही महत्वपूर्ण होते है जितने कि एक जहाज को चलाने के लिए वायुमापक यंत्र (Barometer) एवम् दिशा सूचक यंत्र (Compass) होते है।

(2) लेनदार (Creditors) : जिन व्यापारियों से संस्था उधार माल खरीदती है उन्हें लेनदार कहते है। लेनदारों द्वारा उन्ही संस्थाओं को उधार की सुविधा दी जाती है जो या तो निर्धारित अवधि में भुगतान कर सकते है या जिनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ हो परन्तु इसका ज्ञान केवल वित्तीय विवरणों की सहायता से ही हो सकता है।

(3) बैंक (Bank) : बैंकों द्वारा अल्पकालीन एवम् दीर्घकालीन ऋणों की सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है। यह सुविधा प्रदान करने से पूर्व बैंक द्वारा ग्राहकों की लाभार्जन क्षमता एवम् वित्तीय स्थिति के बारे मे जानकारी प्राप्त की जाती है जो कि वित्तीय विवरण से ही ज्ञात हो सकती है। बैंक ऋण देने से पूर्व इस बात से सन्तुष्ट होना चाहता है कि ऋण व ब्याज की वसूली निर्धारित समयानुसार पूर्ण हो जायेगी।

(4) विनियोजक (Investor) : यदि विनियोजक ऋणपत्रधारी की श्रेणी मे आता है तो नियमित ब्याज प्राप्त करने की दृष्टि से लाभार्जन क्षमता तथा पुनर्भुगतान प्राप्त करने की दृष्टि से कम्पनी की दीर्घकालीन शोधन क्षमता के बारे मे जानकारी प्राप्त करेगा यदि विनियोजक अंषधारी की श्रेणी मे आता है तो वह कम्पनी की लाभार्जन क्षमता, आर्थिक स्थिति, संस्था की प्रगति, एवम् भावी नीतियो,पूॅजी सरंचना मे होने वाले परिवर्तन तथा प्रबन्धकीय योग्यता आदि के बारे मे जानकारी वित्तीय विवरण पत्र से ही प्राप्त करना चाहेगा।

(5) सरकार (Government) : सरकार अपने द्वारा बनाये गये कानूनों की पालना सुनिश्चित करने (कम्पनी अधिनियम, आयकर अधिनियम, उत्पादन एवम् बिक्री कर अधिनियम आदि) के लिए वित्तीय विवरणों की सहायता लेती है। राष्ट्रीयकरण, एकीकरण, विलयनीकरण एवम् पुनर्निर्माण जैसी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये वित्तीय विवरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

(6) अन्य (Others) : उपरोक्त के अलावा जनता एवम् श्रम संगठनों के लिए भी वित्तीय विवरण भावी योजनाओं को बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। संस्था मे रूचि रखने वाले भावी विनियोजक, शोधार्थी, निति निर्धारक, व्यापारिक संगठन एवं सामाजिक चिन्तक व कार्यकर्त्ता भी वित्तीय विवरणों से आवश्यक सूचनाऐं जुटाते है।

विशिष्ट शब्दावली (Terminology)

1. पूँजीगत व्यय (Capital Expenditure) : ऐसा व्यय जो स्थायी सम्पतियों को खरीदने, इनकी कार्यक्षमता मे वृद्वि करने, व्यवसाय की लाभार्जन क्षमता को दो या अधिक वर्षों तक बढाने के लिए किए जाते है पूँजीगत व्यय कहलाते है। ऐसे व्ययों का लाभ एक से अधिक लेखा अवधियों तक मिलता है। पूँजीगत व्ययों मे निम्नलिखित व्ययो को शामिल करते है –

(a) स्थायी सम्पत्तियों को खरीदने के व्यय
(b) स्थायी सम्पत्तियों को स्थापित करने से सम्बन्धित व्यय
(c) पुरानी स्थायी सम्पत्ति खरीदने पर उसकी प्रथम बार मरम्मत करवाने के व्यय
(d) सम्पत्ति की कार्यक्षमता बढाने के लिए किये गये व्यय
(e) अंशों एवम् ऋणपत्रों के निर्गमन सम्बन्धी व्यय
(f) लाइसेंस प्राप्त करने पर व्यय
(g) सम्पत्ति किस्तों में खरीदने पर देय किश्त में मूलधन की राशि
(h) व्यापारिक चिन्ह, ख्याति, पेटेन्ट तथा प्रकाशनाधिकार जैसे व्यापारिक अधिकार खरीदने पर व्यय
(i) सम्पत्ति क्रय से संम्बन्धित कानूनी व्यय तथा मुद्रांक शुल्क
(j) भवन बनाने हेतु नक्शा बनवाने, डिजाइन तथा पर्यवेक्षण हेतु शिल्पकार को किया गया भुगतान
(k) व्यापार के संचालन मे मितव्ययिता लाने हेतु किये गये व्यय
(l) संस्था की आय मे स्थायी रूप से वृद्वि के लिए बनाई गई योजना पर व्यय

2. आयगत व्यय (Revenue Expenditure) : व्यवसाय के संचालन के लिए तथा स्थायी सम्पत्तियों की कार्यक्षमता बनाये रखने के लिए किये जाने वाले व्यय आयगत व्यय कहलाते है। ऐसे व्ययों का लाभ एक ही लेखा अवधि में प्राप्त हो जाता है। ऐसे व्ययों से न तो व्यापार की स्थायी सम्पत्तियों मे वृद्वि होती है और न ही उनकी कार्यक्षमता बढती है। इन व्ययों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है –

(a) माल खरीदने, उसे गोदाम तक लाने तथा बेचने से सम्बन्धित व्यय
(b) स्थायी सम्पत्ति की वर्तमान क्षमता बनाये रखने के लिए किये गये मरम्मत व्यय
(c) व्यवसाय को चलाने के व्ययों मे वेतन, मजदूरी, पानी, बिजली,डाक–तार, टेलीफोन आदि पर व्यय
(d) ऋण एवम् ऋणपत्रों पर ब्याज
(e) लेनदारों को देय ब्याज
(f) व्यापार के प्रशासनिक, विक्रय एवम् वितरण व्यय
(g) माल की पूर्ति के अनुबन्ध को भंग करने पर चुकायी गई क्षतिपूर्ति /जुर्माना

2. स्थगित आयगत व्यय (Deferred Revenue Expenditure) : स्थगित आयगत व्यय वे आयगत व्यय होते हैं जो जिस लेखा अवधि में होते है। उस अवधि के साथ–साथ इनका लाभ आगामी लेखा अवधियों मे भी मिलता रहता हैं अतः जिन जिन वर्षों में जिस अनुपात में लाभ मिलता है उसी अनुपात में इन्हे उस लेखा अवधि के लाभ–हानि खाते मे लिखा जाता है। जब तक ये समस्त व्यय लाभ–हानि खाते में अपलिखित नही हो जाते तब तक इन्हे चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में विविधि व्ययो के शीर्षक में दिखाया जाता है। दुर्घटना में होने वाली हानि या आकस्मिक रूप से होने वाली भारी हानि को स्थगित आयगत व्यय नहीं मानेगे। भारतीय लेखा मानक 5 के अनुसार जिस वर्ष ऐसी हानि हो उस वर्ष के लाभ–हानि खाते में लिखा जाना चाहिये। स्थगित आयगत व्ययो में निम्नलिखित शामिल है –

(a) प्रारम्भिक व्यय
(b) विज्ञापन पर अधिक व्यय
(c) मरम्मत पर अधिक व्यय
(d) विशेष अनुसंधान व्यय
(e) अच्छे स्थान पर व्यापार को ले जाने के व्यय
(f) अंशों एवम् ऋणपत्रों के निर्गमन पर कमीशन

स्थगित आयगत व्यय एवं पूंजीगत व्यय मे अन्तर (Difference between Deferred Revenue Expenditure and Capital Expenditure) :– स्थगित आयगत व्यय एवम् पूंजीगत व्यय उपयोगिता की दृष्टि से (इनका लाभ आगामी लेखा अवधि में मिलता है) एक समान होते हुए भी इन्हे एक नहीं माना जा सकता। स्थगित आयगत व्यय हो जाने के पश्चात् किन्ही कारणों से व्यापार बन्द हो जाये तो इनकी वसूली नही हो सकती है परन्तु पूंजीगत व्यय की दशा मे व्यापार बन्द भी हो जाये तो सम्पत्ति का विक्रय करके मूल्य प्राप्त किया जा सकता है। पूंजीगत व्ययों मे वृद्वि व्यापार की सुदृढ आर्थिक स्थिति का प्रतीक है जबकि स्थगित आयगत व्यय चिट्ठे में दिखाई देना तुलनात्मक दृष्टि से कमजोर आर्थिक स्थिति का परिचायक होता है।

पूंजीगत एवम् आयगत व्यय में अन्तर (Difference between Capital and Revenue Expenditure)

(i) स्थायी सम्पत्तियों की खरीद तथा लगवाने पर होने वाले व्यय पूंजीगत है जबकि चल सम्पत्ति की खरीद तथा गोदाम तक लाने का व्यय आयगत होता है।

(ii) स्थायी सम्पति की कार्यक्षमता बढाने संबंधी व्यय पूंजीगत होते हैं जबकि पुरानी सम्पत्ति के बनाये रखने हेतु (सामान्य मरम्मत एवम् अनुरक्षण) किये गये व्यय आयगत व्यय होते है।

(iii) व्यापार की लाभार्जन क्षमता मे स्थायी वृद्वि या संचालन व्ययों मे स्थायी कमी करने से सम्बन्धित व्यय पूंजीगत होते है जबकि व्यापार के सामान्य संचालन के व्यय आयगत होते है।

(iv) पूंजीगत व्यय दो या अधिक लेखा अवधियों के लिए होते है जबकि आयगत व्यय एक लेखा अवधि से सम्बन्धित होते है।

ऐसे व्यय जो आगमगत प्रकृति के दिखते हुए भी पूंजीगत की तरह लेखांकित होते है। (Expenses likely to be a nature of Revenue but Accounted as Capital)

(i) कच्चामाल (जिसका व्यापार हो), स्टोर्स एवम् मजदूरी का प्रयोग स्थायी सम्पत्तियो को स्थापित करने, उनकी उत्पादन क्षमता बढाने के लिए हो तो इन्हे पूजीगत व्ययों की तरह लेंखाकित किया जायेगा।

(ii) दलाली, कमीशन, कानूनी व्यय जो स्थायी सम्पति को खरीदने के लिए चुकाये गये है तो इनका लेखांकन पूंजीगत व्ययों की ही भांति होगा।

(iii) मरम्मत एवम् नवीनीकरण का व्यय यदि पुरानी सम्पत्ति खरीद कर उसे प्रयोग करना शुरू करने से पूर्व हो या उत्पादन क्षमता बढाने या व्ययों मे स्थायी रूप से कमी करने के लिए हो तो इनका भी लेखांकन पूंजीगत व्ययों की तरह होगा।

(iv) नवीन उत्पाद को बनाने के लिए किये जाने वाले अनुसंधान तथा विकास संम्बन्धि व्यय पूंजीगत की तरह लेखांकित होते है।

(v) व्यापार प्रारम्भ होने से पूर्व या भवन तथा मशीनों के निर्माण काल से सम्बन्धित अवधि का यदि पूँजी पर ब्याज दिया गया है तो उसका लेखाकन पूंजीगत व्ययों की तरह होगा।

(vi) स्थायी सम्पत्तियों को पूर्तिकर्ता के यहां से व्यापार के कार्यस्थल तक लाने के व्यय (परिवहन व्यय, थेला भाड़ा आदि) भी पूंजीगत व्यय होंगे।

वित्तीय विवरणपत्रों की उपयोगिता (Utility of financial Statements) : अन्तिम खातों से प्रबन्धक, विनियोगकर्त्ता, लेनदार, ऋणदाता, कर्मचारी एवं सरकार व्यापार के किसी भी लेखा वर्ष के लाभ या हानि तथा लेखा वर्ष के अन्तिम दिन की आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकते है। व्यापारी स्वयं भविष्य की योजनाऐं बनाता है। लेनदार एवं ऋणदाता अन्तिम खातों को देखकर निर्णय करते है कि व्यापारी को उधार विक्रय की सुविधा एवं ऋण दिया जाय या नहीं। विनियोगकर्त्ता व्यापार में अपनी बचतों को विनियोजित करते समय उसकी आर्थिक स्थिति एवं लाभार्जन क्षमता पर ध्यान देता है। कर्मचारीगण व्यापार की आर्थिक स्थिति को देखकर पता लगाते है कि उसकी नौकरी में स्थायित्व होगा या नही एवं उन्हे पदोन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं। अतः हम कह सकते है कि अन्तिम खाते व्यापार को उन्नति की ओर अग्रसित करने,ऋणदाताओ को आकर्षित करने, विनियोगकर्त्ता एवं साधारण जनता को व्यापार की तरफ आकर्षित करने का अवसर प्रदान करते है।

अन्तिम खातों की लेखा अवधि (Accounting Period for Final Accounts) : व्यापारी द्वारा व्यापार के अन्तिम खाते साधारणतया वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर बनाये जाते है। भारत सरकार द्वारा कर निर्धारण हेतु वित्तीय वर्ष (1^{st} April to 31^{st} March) को सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों, संस्थाओं एवं कम्पनियों के लिए लेखा वर्ष निर्धारित किया गया है। सरकारी निर्देषो को मानना व्यापारिक संस्थाओं एवं गैर व्यापारिक संस्थाओं के लिए अनिवार्य होता है। वैसे तो प्रतिष्ठान कोई भी लेखा अवधि निर्धारित कर उस दिन अपने अन्तिम खाते बना सकते है परन्तु कर निर्धारण की दृष्टि से सरकारी कार्यालयो मे उन्हे अपने अन्तिम खातें 1 अप्रेल से 31 मार्च तक बनाकर प्रस्तुत करने होते है जिससे आयकर (Income Tax) एवं बिकी कर (Sales Tax) इत्यादि के निर्धारण में सुविधा हो। अतः सुविधा की दृष्टि से लेखा अवधि को 1 अप्रेल से प्रारम्भ करके 31 मार्च को समाप्त की जाती है। अर्थात् सम्बन्धित वित्तीय वर्ष ही लेखा वर्ष होता है।

वर्ष समाप्ति पर एवं उस दिन (For the year ending and as on or as at) : अन्तिम खातों में व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता तथा चिट्ठा सम्मिलित होते है। व्यापार खाते तथा लाभ–हानि खाते मे पूरे वर्ष के माल के सम्बन्धित वस्तुगत खातों एवं नाममात्र के खातों के शेषों को प्रदर्शित किया जाता है। अतः शीर्षक मे Trading Account and Profit & Loss Account for the year ending लिखा जाता है। For the year ending से तात्पर्य है कि इसमें सम्पूर्ण लेखा काल के खर्च व आय बताई गई है तथा ये खाते उसी अवधि का लाभ या हानि दर्शाते है। चिट्ठा एक निश्चित तिथि अर्थात मात्र एक दिन या जिस दिन चिट्ठा बनाया जाता है उस दिन की सम्पत्तियों व दायित्वों के शेष प्रकट करता है। अतः Balance Sheet के साथ As on या As at शब्द का प्रयोग किया जाता है।

व्यापार खाता (Trading Account)

व्यापार खाता उन व्यापारिक सस्थाओं द्वारा बनाया जाता है जो निर्मित माल का क्रय एवं विक्रय करती है। यह अवास्तविक या नाम मात्र प्रकृति का खाता है। इस खाते की सहायता से व्यापारी सकल लाभ या सकल हानि की जानकारी प्राप्त करता है। वित्तीय वर्ष में बेचे गये माल की लागत (Cost of Good Sold) और शुद्व विक्रय मूल्य का अन्तर सकल लाभ या हानि होता है। अगर विक्रय की राशि बेचे गये माल की लागत से अधिक है तो सकल लाभ एवं विक्रय

मूल्य की राशि बेचे गये माल की लागत से कम है तो सकल हानि होगी जिसे लाभ हानि खाते में हस्तान्तरित किया जाता है। बेचे गये माल की लागत निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात की जा सकती है –

Cost of Goods Sold = Stock at the beginning + Net Purchase + Direct Expenses –Stock at the end

माना कि वर्ष 2010 मे शुद्व क्रय (क्रय वापसी घटाने के पश्चात्) कुल 2,00,000 रू है तथा 30,000 रू का माल (लागत पर) वर्ष के अन्त तक बिना बिका (वर्ष का अन्तिम रहतिया) है तो विक्रय किये गये माल का लागत मूल्य 1,70,000 ₹ होगा। अगर वर्ष 2011 मे 3,00,000 ₹ की क्रय (क्रय वापसी घटाने के पश्चात्) की जाती है एवं वर्ष के अन्त मे रहतिया 40,000 ₹ (लागत मूल्य पर) है तो बेचे गये माल की लागत होगी।

	₹
वर्ष के प्रारम्भ मे माल की लागत (Cost of the Stock at the beginning of the year)	30,000
Add : क्रय (Purchase)	3,00,000
	3,30,000
Less : वर्ष के अन्त में बिना बिके माल की लागत (Cost of unsold goods at the end year)	40,000
बेचे गये माल की लागत (Cost of Good Sold)	2,90,000

अगर माल का विक्रय (विक्रय वापसी के पश्चात्) 4,00,000 ₹ हो तो सकल लाभ (4,00,000–2,90,000 ₹.) = 1,10,000 ₹ होगा।

व्यापार खाते के उद्देश्य (Objectives of Trading Account)

(i) सकल लाभ की दर ज्ञात करना।

(ii) प्रत्यक्ष खर्चो की जानकारी प्राप्त करना।

(iii) सकल लाभ की दर का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा व्यापार मे हुए शुद्व क्रय शुद्व विक्रय एवं रहतिये की जानकारी प्राप्त करना।

व्यापार खाते की मदें (Items of Trading Account) : व्यापार खाते के नाम एव जमा पक्ष मे दिखायी जाने वाली प्रमुख मदें एवं व्यापार खाते का प्रारूप निम्नलिखित है

Trading Account for the year ending………………

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Opening Stock			By Sales :		
To Purchase			Cash	–	
Less : Purchase Return or			Credit	–	
Return Outward				—	
Less : Goods used as :			Less : Sales Returns or		
Charity	–		Return Inwards	–	—
Drawings	–		By Subsidy received on Sales		
Donation	–		By Closing Stock		
Loss by Fire / Theft	–		By Profit & Loss A/c		(Bal Fig)
Free Sample	–	—	(Gross Loss transferred to		
To Wages / Wages on Purchase			P & L A/c)		
To Wages and Salaries					
To Carriage / Carriage Inward					
To Inward Expenses					
To Custom Duty					

To Import Duty To Octroi & Freight on Purchase To Railway Freight To Dock Charges To Brokerage & Commission on Purchases To Cartage / Cartage on Purchase To Royalty on Purchase To Other Direct Expenses To Profit & Loss A/c (Gross Profit transferred to P & L A/c)	(Bal. Fig.)		
Total	—	Total	—

व्यापार खातें के नाम पक्ष में दिखाई जाने वाली प्रमुख मदें :

1. **रहतिया :** पिछले वित्तीय वर्ष के अन्त का रहतिया चालू वर्ष के प्रारम्भ का रहतिया होता है। जो माल पिछले वर्ष बिना बिका रह जाता है उसे चालू वर्ष के व्यापार खाते के नाम पक्ष मे लिखा जाता है।
2. **क्रय :** जो वस्तु व्यापार में विक्रय के उद्देश्य से क्रय की जाती है उसे व्यापार खाते के नाम पक्ष में दिखाया जायेगा। इसमें नकद एवं उधार दोनों प्रकार के क्रय को लिखा जायेगा। कुल क्रय किये गये माल में से निम्नलिखित मदों को घटाया जायेगा – (अ) क्रय वापसी (ब) व्यापार के स्वामी द्वारा माल का आहरण (स) माल के चोरी हो जाने पर (द) माल दान देने पर (य) माल को मुफ्त नमूनों के रूप मे बाँटने पर आदि। इन मदों को घटाने के पश्चात् शुद्व क्रय की राशि दिखायी जायेगी। उधार एवं नकद क्रय की गयी सम्पत्तियों को इसमें नही लिखा जायेगा। प्रेषण पर प्राप्त माल को भी इसमें नही लिखा जायेगा।
3. **प्रत्यक्ष व्यय :** जो व्यय माल को क्रय करते समय भुगतान किये जाते है उन व्ययों को प्रत्यक्ष व्यय कहते है। दूसरे शब्दों में खरीदे गये माल को व्यापारी के गोदाम अथवा व्यापार स्थल तक लाने पर हुए व्ययों को प्रत्यक्ष व्यय कहते है। जैसे गाड़ी भाड़ा, रेल भाड़ा, मजदूरी, चुंगी, कस्टम ड्युटी इत्यादि।
4. **निर्माण सम्बन्धी व्यय :** जो संस्था माल का निर्माण अथवा उत्पादन करके विक्रय करती है उसके द्वारा कच्चे माल को तैयार माल में बदलने के लिए किये जाने वाले व्ययों को निर्माण व्यय कहते है। इन व्ययों को व्यापार खाते के नाम पक्ष मे दिखाया जाता है। जैसे – कारखाना मजदूरी, कारखाना किराया, कारखाना बिजली एवं पानी, कोयला, गैस इत्यादी पर व्यय।

व्यापार खाते के जमा पक्ष में दिखाई जाने वाली प्रमुख मदें :

1. **विक्रय :** माल के रोकड़ एवं उधार विक्रय की राशि का योग कुल विक्रय होता है। कुल विक्रय में से विक्रय वापसी की राशि को घटाकर शुद्व विक्रय की राशि को रकम के स्तम्भ मे लिखा जाता है। नकद या उधार विक्रय की गयी सम्पत्तियो को व्यापार खाते मे नहीं लिखा जाता है।
2. **रहतिया :** जो माल वित्तीय वर्ष के अन्त में बिना बिके रह जाता है उसे रहतिया कहते है। यह रहतिया तलपट के नीचे दिखाया गया हो तो व्यापार खाते में जमा पक्ष में तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष मे दिखाया जायेगा। वर्ष के अन्त के रहतिये को तलपट मे सम्मिलित किया गया है तो सिर्फ चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जायेगा। इस रहतिये का मूल्यांकन, बाजार मूल्य तथा लागत मूल्य, जो दोनो में से कम हो, उस मूल्य पर करना चाहिए। निर्माणी संस्था के वर्ष के अन्त के रहतिये मे कच्चा माल, अर्द्वनिर्मित माल तथा निर्मित माल शामिल होते है। (वर्ष के अन्त के रहतिये के मूल्यांकन का विस्तृत अध्ययन अगली कक्षाओं में करेगें।)

सकल लाभ या हानि ज्ञात करना : व्यापारी व्यापार खाते से सम्बन्धित लेखा वर्ष के सकल लाभ या सकल हानि की जानकारी प्राप्त कर सकता है। व्यापार खाते के जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक है तो दोनों पक्षों का

अन्तर सकल लाभ होगा। अगर नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से अधिक है तो सकल हानि होगी। सकल लाभ या सकल हानि को लाभ हानि खाते मे स्थानान्तरित किया जायेगा। जिसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है –

(अ) सकल लाभ होने पर

Trading Account Dr.

To P&L Account

(ब) सकल हानि होने पर

Profit & Loss Account Dr.

To Trading Account

उदाहरण (Illustration) 1 – निम्नलिखित शेषों से सचिन का 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता बनाइये (From the following balances, prepare Trading Account of Sachin for the year ending 31st March 2010)

	₹		₹
1.4.2009 को रहतिया (Stock on 1.4.2009)	10,000	विक्रय (Sales)	29,000
उधार क्रय (Credit Purchase)	12,500	मजदूरी (Wages)	500
नकद क्रय (Cash Purchase)	7,500	चुंगी (Octroi)	200
क्रय वापसी (Purchases Return)	1000	गाड़ी भाड़ा (Carriage)	100
अन्तिम रहतिया (Closing Stock)	17,500	कारखाना किराया (Factory Rent)	250
जावक गाड़ी भाड़ा (Carriage Outward)	300	विक्रय वापसी (Sales Return)	150
रायल्टी (Royalties)	750		

हल (Solution) :

Trading Account for the year ending 31st March, 2010

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Stock		10,000	By Sales :	29,000	
To Purchase :			Less : Sales Return	150	28,850
Cash	7,500		By Closing Stock		17,500
Credit	12,500				
	20,000				
Less : Purchases Return	1,000	19,000			
To Wages		500			
To Factory Rent		250			
To Octroi		200			
To Carriages		100			
To Royalties		750			
To Profit & Loss A/c		15,550			
(Gross Profit transfertred to P&L A/c)					
Total		46,350	Total		46,350

टिप्पणी : 1 जावक गाड़ी भाड़ा, अप्रत्यक्ष व्यय है। अतः इसे लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष मे लिखा जायेगा।

2 सकल लाभ की गणना जमा पक्ष के योग मे से नाम पक्ष का योग घटाकर की गयी है।

निर्माण खाता (Manufacturing Account) : जो व्यापारिक संस्थायें वस्तुओं का निर्माण करके उनका विक्रय करती है वे वित्तीय वर्ष के अन्त में यह जानकारी प्राप्त करना चाहती है कि कारखाने में जो उत्पादन किया गया उसकी उत्पादन लागत क्या है? निर्माण खाता व्यापार खाते का ही अंग है। निर्माण खाते में वस्तुओं की उत्पादन लागत ज्ञात करके उसे

व्यापार खाते के नाम पक्ष में स्थानान्तरित किया जाता है। व्यापार खाते से उत्पादन लागत ज्ञात नही हो सकती है। अतः व्यापारी निर्माण खाता बनाता है। निर्माण खाते का प्रारूप निम्नलिखित है –

Manufacturing Account for the year ending …………

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Work-in-Progress		By Work-in-Progress	
To Stock of Raw Material		By Sales of Defective Material	
Add : Purchases of Raw Material		By Cost of Production	
Less : Purchase Return		(Transferred to Trading A/c)	
Less : Stock of Raw Material at the end		(Balancing Figure)	
To Wages			
To Carriage Inward			
To Productive / Manufacgturing Exp.			
To Cartage			
To Salary of Factory Watchman			
To Custom Duty			
To Excise Duty			
To Motive Power			
To Import Duty			
To Dock Dues			
To Factory Rent			
To Factory Expenses			
To Factory Repairs			
To Factory Fuel & Oil, Water & Power			
To Factory Insurance			
To Depreciation on Plant & Machinery			
To Consumable Stores			
To Other Productive Expenses			
Total	—	Total	—

कच्चे माल के अंतिम रहतिये को निर्माण खाते के जमा पक्ष में भी लिखा जा सकता है। ऐसी दशा में यहाँ घटाने की आवश्यकता नहीं होगी।

निर्माण खाता बनाने के बाद व्यापार खाता निम्नलिखित रूप में बनता है –

Trading Account for the year ending ………………

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Stock of finished goods	—	By Sales	—
To Cost of Production	—	Less : Sales Return	—
To Profit & Loss Account	—	By Stock of Finished Goods	—
(Gross Profit transferred to P&L A/c)			
Total	—	Total	—

निर्माणी संस्थाओ के निर्माण खाते के नाम पक्ष में वर्ष के प्रारम्भ का रहतिया – अर्द्वनिर्मित एवं कच्चा माल, कच्चा माल का क्रय माल के क्रय सम्बन्धी समस्त व्यय (क्रय स्थल से कारखाने तक लाने के) जैसे – मजदूरी, रेलगाड़ी भाड़ा इत्यादि तथा माल के निर्माण सम्बन्धी समस्त कारखाना व्यय दिखलाये जाते है।

जमा पक्ष में वर्ष के अन्त का रहतिया (अर्द्वनिर्मित माल तथा कच्चे माल का) खराब माल के विक्रय से प्राप्त राषि को दिखाया जाता है।

नाम एव जमा पक्षों के योग का अन्तर जमा पक्ष में निर्मित माल की लागत (Cost of Production) के नाम से रकम के खाने में लिखा जाता है। उत्पादित माल की लागत व्यपार खाते के नाम पक्ष मे हस्तान्तरित की जाती है।

निर्माणी संस्थाओं के व्यापार खाते के नाम पक्ष में तैयार माल का वर्ष के प्रारम्भ का रहतिया तथा उत्पादित माल की लागत दिखायी जाती है। जमा पक्ष में माल का शुद्व विक्रय मूल्य एवं निर्मित माल का वर्ष के अन्त का रहतिया दिखाया जाता है। नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक है तो सकल हानि तथा जमा पक्ष नाम पक्ष से अधिकहै तो सकल लाभ होता है।

जो संस्थाएँ वस्तुओं का उत्पादन एव विपणन दोनों कार्यों को करती है वे उपरोक्त प्रकार से निर्माण खाता (वस्तुओं की) उत्पादन लागत ज्ञात करने के लिए बनाती है। ऐसी दशा में व्यापार खाते मे प्रत्यक्ष व्ययों को लिखने की आवश्यकता नही होती क्योंकि उनका लेखा निर्माण खाते मे हो चुका होता है। परन्तु संस्थाए केवल तैयार माल के क्रय विक्रय के कार्य मे संलग्न है तो वे सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिए केवल व्यापार खाता ही बनाती है। ऐसी दशा मे व्यापार खाते के नाम पक्ष मे तैयार माल के वर्ष के प्रारम्भ के रहतिये तथा क्रय के अतिरिक्त केवल प्रत्यक्ष व्ययो (जो माल को खरीदने से सम्बन्धित अर्थात पूर्तिकर्त्ता द्वारा माल भेजने से शुरू होकर व्यापारी के गोदाम में पहुँचने तक के व्यय) को ही शामिल किया जाता है। कारखाने मे हाने वाले खर्चो को व्यापार खाते में लिखा जाता है क्योंकि व्यापार मे उत्पादन कार्य नहीं होता है। यदि प्रश्न मे ऐसे खर्चे लिखे हो तो उन्हे लाभ–हानि खाते में लिखा जाता है। जैसे – संयत्र एवं मशीनो पर ह्रास, निरीक्षकों का वेतन आदि।

यदि परीक्षा प्रश्न पत्रों में यह स्पष्ट नही लिखा होता है कि संस्था निर्माण कार्य में संलग्न है या तैयार माल के विपणन कार्य मे संलग्न है तो ऐसी स्थिति में विद्यार्थियो के लिए कठिन हो जाता है कि कारखाना किराया, कोयला, गैस एव पानी, कारखाना मजदूरी वेतन उत्पादन व्यय, ईधन तैल, एव शक्ति आदि मदों को कहाँ दिखाया जाये। ऐसी दशा मे इन व्ययो को व्यापार खाते के नाम पक्ष में ही दर्शाना चाहिए। परन्तु संयंत्र एव मशीनों पर मूल्य ह्रास, निरीक्षकों का वेतन आदि को व्यापार खाते में नही दिखाकर लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष मे दिखाया जायेगा।

उदाहरण (Illustration) : 2 – निम्नलिखित सूचनाओ से निर्माण खाता 31 मार्च 2010 का बनाइये (From the following informations prepare Manufacturing Account on 31st March 2010)

01.04.2009 को रहतिया (Stock)		
कच्चा माल (Raw Material)	₹ 2,885	
अर्द्वनिर्मित माल (Work-in-Progress)	₹ 10,000	
कच्चे माल का क्रय (Purchase of Raw Material)	₹ 40,000	
		₹
उत्पादन खर्चे (Productive Expenses)		500
कारखाना बिजली (Factory Lighting)		600
मजदूरी (Wages)		10,000
गाड़ी भाड़ा (Carriage)		1,843
कारखाना मरम्मत (Factory Repairs)		3,000
कारखाना वेतन (Factory Salary)		1,050
किराया एंव कर (Rent and Taxes)		250

31.03.2010 को रहतिया (Stock)

: कच्चा माल (Raw Material) ₹ 2,505

अर्द्वनिर्मित माल (Work-in-Progress) – ₹ 3,000

हल (Solution) :

Manufactring Account for the year ending 31st March 2010

Particular		Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Work in Progress		10,000	By Work in Process	3,000
To Stock Raw Material	2,855		By Cost of Production	64,343
Add : Purchase's	40,000		(Bal. Fig.)	
	42,855			
Less : Stock of Material	2,505	40,350		
To Carriage		1,843		
To Wages		10,000		
To Factory Repairs		3,000		
To Factory Salaries		1,050		
To Production Expenses		500		
To Factory Lighting		600		
	Total	67,343	Total	67,343

लाभ–हानि खाता (Profit and Loss Account)

व्यापारी व्यापार खाता बनाने के पश्चात् लाभ हानि खाता बनाता है। यह अन्तिम खाते का दूसरा चरण है। लाभ हानि खाता भी अवास्तविक या नाम मात्र का खाता है। इस खाते में व्यापार खाते से ज्ञात सकल लाभ या सकल हानि को हस्तान्तरित किया जाता है। सकल लाभ को जमा पक्ष एवं सकल हानि को नाम पक्ष मे लिखा जाता है। इस खाते में उन सभी अवास्तविक खातों के शेषों को हस्तान्तरित किया जाता है जो व्यापार खाते में नहीं लिखे गये है। लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में सम्बन्धित लेखा वर्ष के समस्त अप्रत्यक्ष आयगत व्यय तथा जमा पक्ष में समस्त आयगत आगम दर्शायी जाती है। इसमें पूंजीगत खर्च व पूंजीगत आय नहीं दिखायी जाती है। इस खाते के द्वारा व्यापारी शुद्व लाभ या शुद्व हानि को ज्ञात करता है जिसे पूँजी खाते में हस्तान्तरित किया जाता है। लाभ–हानि खाते के अन्तर्गत दिखायी जाने वाली मदें निम्नलिखित है –

Profit & Loss Account for the year ending………………

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Trading A/c (Gross Loss)	—	By Trading A/c (Gross Profit	—
To Salaries & Wages	—	By Interest Earned	—
To Rent, Rates & Taxes	—	By Commission Earned	—
To Fire Insurance Premium	—	By Rent Earned	—
To Repairs & Maintenance	—	By Profit on Sale of Fixed	
To Royalty on Sales	—	Assets	—
To Depreciation	—	By Income from Investments	—
To Audit Fees	—	By Sale of Scrap	—
To Bank Charges	—	By Miscellaneous Income	—
To Legal Charges	—	By Discount Earned	—
To Miscellaneous Expenses	—	By Dividends Received	—

To Discount Allowed	—	By Apprentice Premium	—
To Interest on Loans	—	By Bad Debts Recovered	—
To Carriage Outward	—	By Capital A/c	—
To Freight Outward	—	(Net Loss transferred to	
To Commission on Sales	—	Capital Account)	
To Trade Expenses	—		
To Travelling Expenses	—		
To Entertainment Expenses	—		
To Sales Promotion Expenses	—		
To Advertising & Publicity	—		
To Bad Debts	—		
To Packing Expenses	—		
To Loss on Sale of Fixed Assets	—		
To Loss by Theft	—		
To Loss by Fire	—		
To Loss by Embezzlement	—		
To Printing & Stationary	—		
To Postage & Telephone Expenses	—		
To Office Expenses	—		
To Other Indirect Expenses	—		
To Capital A/c	—		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total	—	Total	—

लाभ हानि खाते के नाम पक्ष मे दिखायी जाने वाली प्रमुख मदे : लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में उन अवास्तविक खातों के नाम शेषों को दिखाया जाता है जो व्यापार खाते में नहीं दिखाये गये है।

1. **सकल हानि** : सकल हानि की राशि व्यापार खाते के जमा पक्ष से हस्तान्तरित की जाती है। इस मद को लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में सर्वप्रथम दिखाया जाता है।
2. **अप्रत्यक्ष व्यय** : अप्रत्यक्ष व्यय वे व्यय होते है जो माल के व्यापार स्थल पर पहुँचने के बाद विक्रय करने के लिए किये जाते हैं। इन व्ययो मे प्रशासनिक व्ययों, विक्रय एवं वितरण व्ययों तथा वित्तीय व्ययो को सम्मिलित करते है। प्रारूप मे दर्शाये गये सभी व्ययों को लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।
3. **हानियाँ** : व्यापार से सम्बन्धित समस्त आयगत हानियों एवं स्थायी सम्पतियों के विक्रय से होने वाली हानियों का लेखा लाभ हानि खाते के नाम पक्ष मे किया जाता है। व्यापार की आयगत हानियों में स्थायी सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास, डूबत ऋण, आग द्वारा नष्ट माल, माल का चोरी हो जाना इत्यादि शामिल है।

लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में दिखायी जाने वाली प्रमुख मदें : लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में अवास्तविक खातों के उन जमा शेषों को दिखाया जाता है जो व्यापार खाते में नहीं दिखाए गये है।

1. **सकल लाभ** : सकल लाभ की राषि व्यापार खाते के नाम पक्ष से हस्तान्तरित की जाती है। यह मद सर्वप्रथम लाभ हानि खाते के जमा पक्ष मे दिखायी जाती है।
2. **आय एव लाभ** : लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में अन्य समस्त आय एव लाभ का लेखा (व्यापार खाता में न लिखी जाने वाली आय) किया जाता है। इसमें स्थायी सम्पत्तियो के विक्रय से होने वाले लाभो का लेखा भी किया जाता है। अन्य आय एवं लाभ निम्नलिखित है बटटा प्राप्त, कमीशन प्राप्त, देनदारों से प्राप्त ब्याज, विनियोगों पर ब्याज, किराया प्राप्त, प्रशिक्षु शुल्क, (Income from Apprenticeship), डूबत ऋण की वसूली, प्राप्त क्षतिपूर्ति, इत्यादि।

शुद्व लाभ एवं शुद्व हानि की गणना : लाभ हानि खाते से शुद्व लाभ / हानि की गणना की जाती है। लाभ हानि खाते का नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर की राशि शुद्व हानि कहलाती है एवं जमा पक्ष का

योग नाम पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर की राशि शुद्व लाभ कहलाता है। शुद्व लाभ एवं शुद्व हानि की राषि को पूँजी खाते में हस्तान्तरित कर लाभ हानि खाते को बन्द कर दिया जाता है।

लाभ हानि खाते की आवश्यकता एवं महत्व :

(1) सम्बन्धित वित्तिय वर्ष की वास्तविक लाभ या वास्तविक हानि की जानकारी ज्ञात करना।

(2) शुद्व लाभ की दर ज्ञात करना।

(3) लाभ हानि की सहायता से भविष्य की योजनाऐं बनाना।

(4) तुलनात्मक अध्ययन करना।

(5) समस्त अप्रत्यक्ष व्ययों की जानकारी प्राप्त कर इन व्ययों में कमी करने की योजना बनाना।

उदाहरण (Illustration) 3 : निम्नलिखित शेषों से 31 मार्च 2010 को लाभ–हानि खाता बनाइये (From the following balances prepare Profit and Loss Account on 31st March 2010)

कमीशन प्राप्त (Commission Received)	20,000	वेतन (Salaries)	80,000
प्रशिक्षु शुल्क (Apprenticeship Fees)	25,000	किराया (Rent)	15,000
ऋण पर ब्याज (Intrest on Loan)	2000	अंकेक्षण शुल्क (Audit Fees)	8,000
जीवन बीमा प्रीमियम (Life Insurance Premium)	30,000	विक्रय खर्चे (Selling Expenses)	10,000
विनियोग पर ब्याज (Interest on Investment)	5,000	स्टेशनरी (Stationary)	3,000
पैकिंग खर्चे (Packing Exp)	7,000	व्यापारिक व्यय (Trade Expenss)	12,000
बटट्ा (Discount)	1000	डूबत ऋण (Bad Debts)	5,000
पूंजी पर ब्याज (Interest on Capital)	2000	सकल लाभ (Gross Profit)	1,50,000
आहरण पर ब्याज (Interest on Drawing)	500		

हल (Solution) :

Profit & Loss Account for the year ending 31st March 2010

Dr. Cr.

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Salaries	80,000	By Trading A/c (Gross Profit)	1,50,000
To Rent	15,000	By Commission	20,000
To Audit Fees	8,000	By Apprenticeship Fees	25,000
To Selling Expenses	10,000	By Interest on Investment	5,000
To Interest on Loan	2,000	By Interest on Drawings	500
To Stationery	3,000		
To Trade Expenses	12,000		
To Packing Expenes	7,000		
To Bad Debts	5,000		
To Discount	1,000		
To Interest on Capital	2,000		
To Capital (Net Profit transferred to Capital A/c)	55,500		
	2,00,500		2,00,500

टिप्पणी :

1. जीवन बीमा प्रीमियम का लेखा लाभ हानि खाते में नही किया जाता है क्योंकि यह स्वामी का निजी व्यय है

इसलिए इसे आहरण मानते हुए पूंजी खाते में नाम किया जायेगा।

2. बट्टे को लाभ हानि खाते के नाम पक्ष मे दिखाया गया है क्योंकि बटट्ा खाते के शेष के बारे में कोई सूचना न हो तो यह माना जाता है कि बटट्ा दिया (Allowed) गया है।

अन्तिम प्रविष्टियां (Closing Entries) : व्यापारी वित्तीय वर्ष के अन्त में अवास्तविक खातों के शेषों को व्यापार खाते एवं लाभ हानि खाते में जिन लेखा प्रविष्टयों के द्वारा हस्तान्तरित करता है उन्हे अन्तिम प्रविष्टयाँ कहते है। इसका लेखा मुख्य जर्नल में किया जाता है। इन खातों के शेषों को हस्तान्तरित करने का व्यापारी का मुख्य उद्वेष्य वित्तिय वर्ष के अन्त में व्यापारिक क्रियाओं से होने वाले लाभ या हानि की जानकारी प्राप्त करना होता है। विभिन्न अन्तिम प्रविष्टयाँ निम्नलिखित प्रकार से की जाती है –

क्रय वापसी को क्रय खाते में हस्तान्तरित करने के सम्बन्ध में	Purchase Return A/c Dr. To Purchases A/c (Being purchases Return transferred to purchase account)
विक्रय वापसी को विक्रय खाते में हस्तान्तरित करने के सम्बन्ध में	Sales A/c Dr. To Sales Return A/c (Being Sales Return transferred to Sales account)
व्यापरिक खाते के नाम पक्ष में हस्तान्तरित किये जाने वाले खातो के सम्बन्ध में	Trading A/c Dr. To Stock A/c To Purchases A/c (Net) To All Direct Expenses A/c (Being various balances transferred to trading account)
व्यापारिक खाते के जमा पक्ष मे हस्तान्तरित किये जाने वाले खातों के सम्बन्ध में	Sales A/c (Net) Dr. To Trading A/c (Being various balances transferred to trading account)

टिप्पणी : व्यवहार में क्रय वापसी को कुल क्रय की राशि में से घटा दिया जाता है एवं विक्रय वापसी को कुल विक्रय की राषि में से घटा दिया जाता है। क्रय वापसी एवं विक्रय वापसी को व्यापार खाते में हस्तान्तरित करने पर क्रय वापसी को व्यापार खाते के जमा पक्ष मे एवं विक्रय वापसी को नाम पक्ष में दिखाया जा सकता है।

वर्ष के अन्त में विद्यमान रहतिये के सम्बन्ध में	Stock A/c To Trading A/c (Being stock transferred to trading Account)	Dr.
सकल लाभ होने पर	Trading A/c To Profit & Loss A/c (Being Gross Profit transferred to P&L A/c)	Dr.
सकल हानि होने पर	Profit & Loss A/c To Trading A/c (Being Gross Loss transferred to P&L A/c)	Dr.
लाभ एवं हानि खाते के नाम में हस्तान्तरित किये जाने वाले खातों के सम्बन्ध में	Profit & Loss A/c To Rent A/c To Stationery A/c To Discount A/c To Loss by fire A/c To Other Indirect Expenses A/c (Being various Expenses and Losses transferred to P&L Account)	Dr.
लाभ एवं हानि खाते के जमा पक्ष में हस्तान्तरित किये जाने वाले खातों के सम्बन्ध में	Commission Received A/c Interest Received A/c Other Incomes A/c Other Profit A/c To P & L A/c (Being various Incomes & Profits transferred to P&L Account	Dr. Dr. Dr. Dr.

शुद्ध लाभ होने पर	Profit and Loss A/c To Capital A/c (Being Net Profit transeferred to Capital Account)	Dr.
शुद्ध हानि होने पर	Capital A/c To Profit & Loss A/c (Being Net Loss transeferred to Capital Account)	Dr.

उदाहरण (Illustration) 4 : 31 मार्च 2010 को बनाये गये निम्नलिखित तलपट से अन्तिम प्रविष्टयाँ, व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइये (Pass Closing entries and prepare Trading Account and Profit and Loss Account from the following Trial Balance prepared 31st March 2010)

S.No.	Name of Ledger Account	L.F.	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
1	पूंजी (Capital Account)		-	15,250
2	रोकड़ शेष (Cash Balance)		2,000	-
3	लेनदार (Creditors)		-	2,000
4	मजदूरी (Wages)		1,000	-
5	क्रय (Purchase)		8,000	-
6	बैंक शेष (Bank Balance)		5,000	-
7	प्राप्त बटट्टा (Discout Received)		-	500
8	फर्नीचर (Furniture)		1,000	-
9	देनदार (Debtors)		4,000	-
10	विक्रय (Sales)		-	14,000
11	आवक वापसी (Return Inward)		750	-
12	वेतन (Salaries)		900	-
13	सामान्य खर्चे (General Expenses)		200	-
14	आहरण (Drawing)		1000	-
15	किराया (Rent)		500	-
16	रेल भाड़ा (Railway Freight)		250	-
17	जावक वापसी (Return Outward)		-	750
18	मशीनरी (Machinery)		3,000	-
19	रहतिया (Stock)		5,000	-
20	प्राप्त ब्याज (Interest Received)		-	100

31 मार्च 2010 को रहतिया (Stock) ₹ 4,000

हल (Solution) :

अन्तिम प्रविष्टियाँ (Closing Entries)

Journal Proper

Date	Particular	L.F.	Dr. ₹	Cr. ₹
2010 Mar 31	Return Outward A/c Dr. To Purchase A/c (Being return outward transferred to purchase Account)		750	750
Mar 31	Sales A/c Dr. To Return Inward A/c (Being Sales return transferred to Sales A/c)		750	750

Mar 31	Trading A/c Dr. To Stock A/c To Purchase A/c (Net) To Wages A/c To Railway Freight Account (Being various balances tranceferred to Trading A/c)		13,500	 5,000 7,250 1,000 250
Mar 31	Sales A/c (Net) Dr. To Trading A/c (Being various balances transferred to Trading A/c)		13,250	 13,250
Mar 31	Stock A/c Dr. To Trading A/c (Being Stock brought in to book)		4,000	 4,000
Mar 31	Trading A/c Dr. To P&L A/c (Being Gross Profit transferred to P&L A/c)		3,750	 3,750
Mar 31	P&L A/c Dr. To Salaries A/c To General Expenses A/c To Rent A/c (Being various Balances transferred to P&L A/c)		1,600	 900 200 500
Mar 31	Discount A/c Dr. Interest A/c Dr To P&L Account (Being various balances transferred to P&L A/c)		500 100	 600
Mar 31	P&L A/c Dr. To Capital A/c (Being net profit transferred to Capital A/c)		2,750	 2,750

Trading Account for the year ending 31st March 2010

Dr. Cr.

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Stock		5,000	By Sales	14,000	
To Purchases	8,000		Less : Return Inward	750	13,250
Less : Return Outward	750	7,250	By Closing Stock		4,000
To Wages		1,000			
To Railway Freight		250			
To Profit & Loss A/c		3,750			
(Gross Profit transferred to P&L A/c)					
	Total ₹	17,250		Total ₹	17,250

Profit & Loss Account for the year ending 31st March 2010

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Salaries	900	By Trading A/c (Gross Profit)	3,750
To General Expenses	200	By Discount Received	500

To Rent	500	By Interest Received	100
To Capital A/c	2,750		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total ₹	4,350	Total ₹	4,350

चिट्ठा (Balance Sheet)

व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाने के पश्चात् प्रत्येक व्यापारी का अगला कदम चिट्ठा बनाना होता है। चिट्ठा वित्तीय वर्ष के अन्त मे निश्चित तिथि को बनाया जाता है।

चिट्ठे का अर्थ : चिट्ठा एक वित्तीय विवरण पत्र है जिसमें एक निश्चित तिथि को व्यापारी की लेखा पुस्तकों में विद्यमान सम्पत्तियों एवं दायित्वों का उल्लेख होता है। इसमें उन खातों के शेषों को लिखा जाता है जो व्यापार एवं लाभ हानि खाते मे नहीं लिखे गये है। अर्थात् व्यक्तिगत सम्पत्तियों, दायित्वों एवं पूँजी से सम्बन्धित खातों के शेष लिखे जाते है।

विभिन्न विद्वानो ने चिट्ठे को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है। **फ्रीमेन** के अनुसार–स्थिति विवरण निश्चित तिथि पर एक व्यक्ति के व्यापार की सम्पत्तियों, दायित्वों और स्वामित्वों की मदवार तालिका है।

पामर के अनुसार :– स्थिति विवरण एक दी गई निश्चित तिथि का विवरण है जो एक ओर व्यापारी की सम्पत्तियों एवं अधिकारों और दूसरी ओर दायित्वो को प्रकट करता है।

उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते है कि चिट्ठा निश्चित तिथि पर व्यापार की आर्थिक स्थिति का दर्पण है।

चिट्ठे की वि□ोषताएँ :

1. चिट्ठा एक विवरण पत्र है खाता नही है।
2. चिट्ठे मे नाम एवं जमा पक्ष नहीं होते है।
3. सामान्यतया चिट्ठे में बायी तरफ दायित्वों एवं दायीं तरफ सम्पत्तियों को लिखा जाता है।
4. चिट्ठे मे 'To' और 'By' शब्दों का प्रयोग नहीं होता है।
5. चिट्ठे में उन खातों के शेष लिखे जाते है जो व्यापार खाते एवं लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित नहीं हुए हो अर्थात् व्यक्तिगत एवं वास्तविक खातो के शेषों को लिखा जाता है।
6. चिट्ठे में दर्शायी गयी सम्पत्तियाँ एवं दायित्व निश्चित तिथि को व्यापार मे विद्यमान होती है।

चिट्ठा बनाने के उद्दे□य :

1. व्यापार की वित्तीय स्थिति की जानकारी के लिए।
2. सम्पत्तियों की प्रकृति एवं मूल्यों की जानकारी के लिए।
3. दायित्वों की प्रकृति एवं मूल्यों की जानकारी के लिए।
4. अगले वित्तीय वर्ष के प्रथम दिन चिट्ठे की सहायता से ही प्रारम्भिक प्रविष्टियां की जाती है।

चिट्ठे का प्रारूप : चिट्ठे के शीर्षक मे As on अथवा As at शब्द लिखे जाते है क्योकि यह विवरण पत्र सम्पूर्ण वित्तिय वर्ष की स्थिति को प्रकट नही करता अपितु किसी एक दिन की आर्थिक स्थिति को प्रकट करता है।

Balance Sheet As on ____________

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	___		___

चिट्ठे की मदें :

दायित्व : दायित्वों से तात्पर्य स्वामी के कोशों के अतिरिक्त वित्तीय ऋणों से है। दायित्वो का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है। 1. बाह्य दायित्व 2. आन्तरिक दायित्व 3. संदिग्ध दायित्व

सम्पतियाँ : जिन व्यक्तिगत एवं वास्तविक खातों के नाम शेष जो व्यापार खाते एवं लाभ हानि खाते बनाते समय बंद नहीं किये गये हों उन खातो को सम्पत्ति पक्ष में दिखाते है। सम्पत्तियों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है – 1. स्थायी सम्पतियॉ 2. चालू सम्पतियॉ 3. विनियोग : व्यापार मे विद्यमान अतिरिक्त राशि को व्यापार के बाहर

विनियोग करता है। विनियोग के दो रूप हो सकते है – 1. दीर्घकालीन 2. अल्पकालीन । यदि व्यापारी को लम्बे समय तक रकम की आवश्यकता न हो या परिस्थितिवश व्यापारी को दीर्घकाल तक वह राशि विनियोग करनी आवश्यक हो तो ऐसे विनियोग दीर्घकालीन श्रेणी में आते हे। यदि कुछ अल्प समय के लिए ही व्यापारी के पास अतिरिक्त धन राशि प्राप्त हुई हो जिसे कुछ समय बाद उत्पादन क्रिया या किसी स्थायी सम्पत्ति के क्रय करने में प्रयोग करना हो तो वह धनराशि अल्प समय के लिए भी फालतू न पड़ी रहे उसके लिए वह उसे अल्पकालीन विनियोग में निवेश कर सकता है। जैसे बैंक में स्थायी जमा, इत्यादि।

चिट्ठे मे सम्पत्तियो एवं दायित्वो को समूह एवं निश्चित क्रम में लिखना (Grouping and Marshalling of Assets & Liabilities) : समूह का अर्थ है कि समान प्रकृति की मदों को एक शीर्षक के अन्तर्गत लिखना जैसे चालू दायित्व जिसमें व्यापारिक लेनदार, देय बिल, अदत्त व्यय, आदि शामिल है।

क्रमवार का अर्थ है विभिन्न सम्पत्तियों एवं दायित्वों को चिट्ठे में क्रमबद्व रूप से दिखाना है। क्रम तीन प्रकार के होते है। (1) तरलता क्रम (Liquidity Order) (2) स्थायित्व क्रम (Permanance Order) (3) शीर्ष रूप (Vertical form)

संदिग्ध दायित्व (Contingent Liabilities) : ऐसे दायित्व जो किसी घटना के घटित होने पर व्यापार के दायित्व में परिवर्तित हो सकते हैं अन्यथा नहीं, उन्हें संदिग्ध दायित्व कहते हैं। जब तक ये दायित्व का रूप न ले तब तक इन्हें चिठ्ठे में शामिल नहीं किया जा सकता। इन्हें केवल चिट्ठे के नीचे दायित्व पक्ष की और टिप्पणी के रूप में दिखाया जाता है। यह निम्न हो सकते है – भुनाये गये बिलों सम्बंधी दायित्व, जमानत सम्बंधी दायित्व, अंषधारियों से सम्बन्धित दायित्व, विचाराधीन दावों से सम्बंधी दायित्व।

(1) तरलता क्रम : इस क्रम के अनुसार सम्पत्तियों को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जाता है कि सम्पत्ति सरलता से नकद में बदली जा सकती है उसे पहले एवं उत्तरोत्तर क्रमानुसार लिखी जाती है। इसी क्रम के अनुसार दायित्वों में सबसे प्रथम भुगतान होने वाले दायित्व को सबसे पहले एवं बाद में चुकाये जाने वाले दायित्वों को उत्तरोत्तर क्रमानुसार लिखा जाता है। चिट्ठे का तरलता क्रम में प्रारूप निम्नलिखित है –

Balance Sheet As on……………….

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Current Liabilities :		—	Current Assets :	
Bank Overdraft		—	Cash In Hand	—
Bill Payble		—	Cash at Bank	—
Out Standing Expenses		—	Bill Receivable	—
Sundary Creditors		—	Sundary Debtors	
Income received in advance		—	Prepaid Expenses	—
Long Term Liabilities		—	Accured Income	—
Bank Loan		—	Stock	
Loan on Mortgage		—	Finished Stock	—
Capital :		—	Work in Progress	—
Add : Net Profit	–		Raw Material	—
Or			Investment	—
Less : Net Loss	–		Fixed Assets :	
Less : Drawings	–		Furniture	—
Less : Income Tax	–	—	Plant & Machinery	—

		Building	—
		Patents	—
		Goodwill	—
Total	——	Total	——

(2) स्थायित्व क्रम : यह क्रम तरलता क्रम से विपरीत है। इसमें सर्वप्रथम स्थायी सम्पत्तियों एवं अदृष्य सम्पत्तियों को लिखा जाता है जैसे ख्याति, पेटेंट इत्यादि। सबसे अन्त मे चालू सम्पत्तियों को लिखा जाता है जैसे नकद शेष, बैक शेष, इत्यादि। दायित्वों के क्रम में भी लम्बी अवधि के दायित्व सर्वप्रथम लिखे जाते है। जैसे पूंजी, बैंक, ऋण इत्यादि। सबसे अन्त में सर्वप्रथम भुगतान होने वाले दायित्व लिखे जाते है जैसे बैंक अधिविकर्ष, देय बिल इत्यादि। एकाकी व्यापारी तथा साझेदारी फर्म साधारणतया तरलता क्रम मे चिट्ठे बनाते है परन्तु यह आवश्यक नहीं है। कम्पनियों को कम्पनी अधिनियम 1956 के अनुसार स्थायित्व क्रम में चिट्ठा बनाना अनिवार्य है। वर्तमान में कम्पनियो द्वारा लम्बाकार प्रारूप में भी चिट्ठे बनाये जाते है चिट्ठे के स्थायित्व क्रम का प्रारूप निम्न है।

Balance Sheet As on………………

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital :	–		Fixed Assets :	
Add : Net Profit	–		Goodwill	—
Or			Patents	—
Less : Net Loss	–		Building	—
Less : Drawings	–		Plant & Machinery	—
Less : Income Tax	–	—	Furniture	—
Long Term Liabilities :		—	Current Assets :	—
Loan on Mortgage		—	Short Term Investments	—
Bank Loan		—	Sundry Debtors	—
Current Liabilities :		—	Prepaid Expenses	—
Income received in Advance		—	Accrued Income	—
Sundry Creditors		—	Stock	—
Outstanding Expenses		—	Raw Material	—
Bills Payable		—	Work-in-Progress	—
Bank Overdraft		—	Finished Goods	—
			Bills Receivable	—
			Cash at Bank & in hand	—
Total		——	Total	——

संदिग्ध दायित्व (Contingent Liabilities) :

उदाहरण (Illustration) 5 : 31 मार्च 2010 को निम्नलिखित शेषों से सुनील का चिट्ठा तरलता एवं स्थायित्वक्रम में बनाइये (Prepare Balance Sheet of Sunil in order of Liquidity and Permanance on 31st March 2010)

पूंजी (Capital)	20,000	रोकड़ हस्ते (Cash in hand)	500
विविध देनदार (Sundary Debtors)	5,000	आहरण (Drawing)	1,000
विविध लेनदार (Sundary Creditors)	4,500	भवन (Building)	10,000
बैक ऋण (Bank Loan)	8,000	फर्नीचर (Furniture)	1,500

एकत्रित विक्रय कर (Collected Sales Tax)	300	विनियोग (Investments)	2,500
प्राप्य बिल (Bill Receivable)	200	आयकर (Income-Tax)	500
31.03.2010 को रहतिया (Stock)	3,500	ख्याति (Good Will)	3,000
मशीनरी (Machinery)	2000	भूमि (Land)	9,000
देय बिल (Bill Payble)	100	शुद्ध लाभ (Net Profit)	8,000
बैक शेष नामे (Bank Balance Dr.)	1,200	पेटेंट (Patents)	1,000

हल (Solution) :

तरलता क्रम मे चिट्ठा इस प्रकार बनेगा –

Balance Sheet As on 31st March 2010

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Current Liabilities :			Current Assets :	
Bills Payable		100	Cash in Hand	500
Collected Sales Tax		300	Bank Balance	1,200
Sundry Creditors		4,500	Bills Receivable	200
Long Term Liabilities :			Sundry Debtors	5,000
Bank Loan		8,000	Stock	3,500
Capital	20,000		Investment	2,500
Add : Net Profit	8,000		Fixed Assets :	
	28,000		Furniture	1,500
Less : Drawings	1,000		Machinery	2,000
	27,000		Building	10,000
Less : Income Tax	500	26,500	Land	9,000
			Patents	1,000
			Goodwill	3,000
Total		39,400	Total	39,400

स्थायित्व क्रम में चिट्ठा इस प्रकार बनेगा –

Balance Sheet As on 31st March 2010

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital	20,000		Fixed Assets :	
Add : Net Profit	8,000		Goodwill	3,000
	28,000		Patents	1,000
Less : Drawings	1,000		Land	9,000
	27,000		Building	10,000
Less : Income Tax	500	26,500	Machinery	2,000
Long Term Liabilities :			Furniture	1,500

Bank Loan	8,000	Investment	2,500
Current Liabilities :		Current Assets :	
Sundry Creditors	4,500	Stock	3,500
Collected Sales Tax	300	Sundry Debtors	5,000
Bill Payable	100	Bills Receivable	200
		Bank Balance	1,200
		Cash in Hand	500
Total	39,400	Total	39,400

उदाहरण (Illustration) 6 : 31 मार्च 1997 को व्यापार खाता, लाभ–हानि तथा चिट्ठा बनाइए (Prepare Trading Account, Profit & Loss and Balance Sheet as on 31st March, 1997)

31.03.1997 को स्टॉक का लागत मूल्य 1,400 ₹ व बाजार मूल्य 1,300 ₹ है। (Stock Costing ₹ 1400 and Market Price ₹ 1300 on 31.03.1997) (मा.शि.बो.राज. 1998)

विवरण (Particulars)	Debit ₹	Credit ₹
पूंजी (Capital)		6,200
भवन (building)	6,000	
रोकड़ शेष (Cash Balance)	700	
विनियोग 01.04.96 को क्रय (Investments Purchased on 01.04.96)	1,200	
उपस्कर (Furniture)	600	
देनदार व लेनदार (Debtors & Creditors)	1,420	1,100
विनियोग पर ब्याज (Interest on Investments)		100
बट्टा (Discount)	20	
छपाई व लेखन सामग्री (Printing & Stationery)	50	
किराया व दरें (Rent & Rates)	1,700	
मजदूरी व चुंगी (Wages & Octroi)	710	
क्रय व विक्रय (Purchase and Sales)	8,000	12,600
वापसी (Returns)	600	1,000
	21,000	21,000

हल (Solution) :

Trading Account for the year ending 31st March, 1997

Dr. Cr.

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Purchase	8,000		By Sales	12,600	
Less : Return	1,000	7,000	Less : Return	600	12,000
To Wages & Octroi		710	By Closing Stock		1,300
To Profit & Loss A/c		5,590			
(Gross Profit transferred to P&L A/c)					
Total ₹		13,300	Total ₹		13,300

Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 1997

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Discount	20	By Trading A/c	5,590
To Printing & Stationery	50	By Interest on Investment	100
To Rent & Rates	1,700		
To Capital A/c	3,920		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total ₹	5,690	Total ₹	5,690

Balance Sheet As on 31st March 1997

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	₹	1,100	Cash Balance	700
Capital	6,200		Debtors	1,420
Add : Net Profit	3,920	10,120	Stock	1,300
			Investment	1,200
			Furniture	600
			Building	6,000
Total		11,220	Total	11,220

उदाहरण (Illustration) 7 : विवेक ब्रदर्स का 31 मार्च, 1998 को तलपट निम्नलिखित था। (The Following was the Trial Balance of Vivek Brothers as on 31st March, 1998)

Name of Ledger Account	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
पूंजी (Capital Account)	–	1,25000
भवन (Building	75,000	–
रोकड़ (Cash)	6,500	–
रहतिया (Stock)	34,500	–
फर्नीचर (Furniture)	6,500	–
देनदार व लेनदार (Debtor & Creditors)	40,000	24,000
मोटर कार (Motor Car)	60,000	–
डूबत ऋण (Bad Debts)	1,750	–
सादिग्ध ऋण आयोजन (Provision for Doubutful Debts)	–	3,000
ब्याज (Interest)	1,000	–
कमीशन (Commision)	–	3,750

कर तथा ब्याज (Tax & Interest)	8,000	–
बैक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	–	54,500
कार व्यय (Car Expenses)	9,000	–
सामान्य व्यय (General Expenses)	8,000	–
वेतन (Salaries)	33,000	–
क्रय व विक्रय (Purchases and Sales)	54,750	1,28,500
वापसी (Returns)	2,000	1,250
	3,40,000	3,40,000

व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता चिट्ठा तैयार कीजिए। (Prepare Trading Account, Profit and Loss Account and Balance Sheet)

31.12.1998 को रहतिया 32,500 ₹ था (Stock was ₹ 32,500) (मा.शि.बो.राज. 1999)

हल (Solution) :

Trading Account for the year ending 31st March, 1998

Dr. Cr.

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Stock		34,500	By Sales	1,28,500	
To Purchase	54,750		Less : Return	2,000	1,26,500
Less : Return	1,250	53,500	By Closing Stock		32,500
To Profit & Loss A/c		71,000			
(Gross Profit transferred to P&L A/c)					
Total ₹		1,59,000	Total ₹		1,59,000

Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 1998

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Bad Debts	1,750	By Trading A/c	71,000
To Interest	1,000	By Commission	3,750
To Taxes & Interest	8,000		
To Car Expenses	9,000		
To General Expenses	8,000		
To Salaries	33,000		
To Capital A/c	14,000		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total ₹	74,750	Total ₹	74,750

Balance Sheet As on 31st March 1998

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bank Overdraft	54,500	Cash	6,500
Creditors	24,000	Debtors	40,000

Provision for Bad Debts		3,000	Stock	32,500
Capital	1,25,000		Furniture	6,500
Add : Net Profit	14,000	1,39,000	Motor Car	60,000
			Building	75,000
Total		2,20,500	Total	2,20,500

उदाहरण (Illustration) 8 : 31 मार्च, 1998 को श्री अनिल की पुस्तको से निम्नलिखित शेषों से अन्तिम खाते बनाइये। (Prepare Final Accounts from the following balance extracted from the books of Mr. Anil on 31st March 1998)

	₹		₹
आवक वापसी (Return Inward)	8,000	रहतिया (Stock)	68,000
कारखाना ईधन व भाड़ा (Factory Fule & Fright)	32,000	क्रय (Purchases)	7,40,000
देय बिल (Bill Payble)	24,000	विक्रय (Sales)	11,00,000
संदिग्ध ऋण आयोजन (Provision for Doubtful Debt)	6,000	विक्रय व्यय (Selling Expenses)	70,000
प्राप्य बिल (Bill Recevable)	50,000	रोकड़ शेष (Cash Balance)	14,000
अग्नि बीमा प्रीमियम (Fire Insurance Premium)	4,000	पूंजी (Capital)	5,00,000
जावक वापसी (Return Outward)	4,000	लेनदार (Creditors)	1,20,000
वेतन व मजदूरी (Salaries & Wages)	94,000	बैंक ऋण (Bank Loan)	40,000
बैक ऋण पर ब्याज (Interest on Bank Loan)	4,000	देनदार (Debtors)	1,74,000
प्राप्त कमीशन (Commission Received)	8,000	मशीनरी (Machinery)	2,00,000
डूबत ऋण (Bad Debts)	4,000	भवन (Building)	2,80,000
		आहरण (Drawing)	60,000

अन्य सूचनाएँ (Other Informations) : 31 मार्च,1998 को स्टॉक 98,800 ₹ (stock on 31st March, 1998 was of ₹ 98,800)

(मा.शि.बो.राज. 2000)

हल (Solution) :

Trading Account for the year ending 31st March, 1998

Dr. Cr.

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Stock		68,000	By Sales	11,00,000	
To Purchase	7,40,000		Less : Return Inwards	8,000	10,92,000
Less : Return Outward	4,000	7,36,000	By Closing Stock		98,800
To Factory Fuel & Freight		32,000			
To Profit & Loss A/c		3,54,800			
(Gross Profit transferred to P&L A/c)					
Total ₹		11,90,800	Total ₹		11,90,800

Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 1998

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Selling Expenses	70,000	By Trading A/c	3,54,800
To Fire Insurance Premium	4,000	By Commission	8,000
To Salaries & Wages	94,000		
To Interest on Bank Loan	4,000		
To Bad Debts	4,000		
To Capital A/c	1,86,800		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total ₹	3,62,800	Total ₹	3,62,800

Balance Sheet as on 31th March 1998

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Provision for Bad Debts		6,000	Cash Balance	14,000
Creditors		1,20,000	Debtors	1,74,000
Bill Payable		24,000	Bill Receivable	50,000
Bank Loan		40,000	Stock	98,800
Capital	5,00,000		Machinery	2,00,000
Add : Net Profit	1,86,800		Building	2,80,000
	6,86,800			
Less : Drawings	60,000	6,26,800		
	Total ₹	8,16,800	Total ₹	8,16,800

तलपट एवं चिट्ठे मे अन्तर –

क्रम सख्या	आधार	तलपट (Trial Balance)	चिट्ठा (Balance Sheet)
1.	उद्वेश्य	तलपट बनाने का उद्वेश्य खाता बही की गणितीय शुद्धता की जॉच करना है।	चिट्ठा बनाने का उद्वेश्य व्यापार की आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना है।
2.	पक्ष	इसमे राशि लिखने के लिए नाम एव जमा पक्ष होते है।	इसमें सम्पत्ति तथा दायित्व पक्ष होते है।
3.	अनिवार्यता	इसका बनाना अनिवार्य नहीं है।	इसका बनाना अनिवार्य है।
4.	खातो के प्रकार	इसमें सभी प्रकार के खातों के शेष दिखाये जाते है।	इसमें व्यक्तिगत एवं वस्तुगत खातो के शेष दिखाये जाते है।

5.	प्रमाणिकता	तलपट कानूनी दृष्टिकोण से प्रमाणिक नहीं है।	चिट्ठा कानूनी दृष्टिकोण से प्रमाणिक है।
6.	खातो को बंद करना	इसे बनाने के लिए खातों को बंद करना अनिवार्य नहीं है।	इसे बनाने के लिए खातो को बंद करना अनिवार्य है।
7.	लाभ–हानि का ज्ञान	तलपट से लाभ एवं हानि की जानकारी प्राप्त नहीं होती है।	चिट्ठे से लाभ एवं हानि की जानकारी प्राप्त होती हैं।
8.	अवधि	तलपट व्यापारी द्वारा वर्ष में कितनी ही बार बनाया जा सकता है।	चिट्ठा व्यापारी, साधारणतया वित्तीय वर्ष के अन्त मे ही बनाता है।
9.	अंग	तलपट दोहरा लेखा प्रणाली एवं अन्तिम खातो का अंग नहीं है।	चिट्ठा दोहरा लेखा प्रणाली एवं अन्तिम खातो का अंग है।

उदाहरण (Illustration) 9 : निम्नलिखित शेषों से राधारमण एण्ड कम्पनी का व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा 31 मार्च 2010 का बनाइये। (From the following balance, Prepare Trading Account, Profit and Loss Account and Balance Sheet of RadhaRaman & Co. 31st March 2010)

हस्तस्थ रोकड़ (Cash in Hand)	700	विक्रय (Sales)	4,800
बैंक मे रोकड़ (Cash at Bank)	1,300	जावक वापसी (Return Outward)	100
क्रय (Purchase)	2,580	लेनदार (Creditors)	600
क्रय पर गाड़ी भाड़ा (Carriage on Purchase)	30	ऋण (Loan)	480
संयत्र व मशीनरी (Plant & Machinery)	1,400	देय विपत्र (Bills Payable)	200
रहतिया (Stock 1-4-2009)	700	पूंजी (Capital)	2525
बीमा (Insurance)	40		
किराया व दर (Rent & Rates)	50		
मजदूरी (Wages)	30		
विक्रय पर गाड़ी भाड़ा (Carriage on Sales)	15		
वेतन (Salaries)	180		
प्राप्य विपत्र (Bills Receivable)	300		
देनदार (Debtors)	1250		
कमीशन (Commission)	70		
आवक वापसी (Return Inward)	40		
बट्टा (Discount)	20		
	8,705		8,705

रहतिया 31 मार्च 2010 को 1530 ₹ (Stock on 31st March, 2010 was ₹ 1530)

हल (Solution) :

Trading Account for the year ending 31st March, 2010

Dr. Cr.

Particular		Amount ₹	Particular		Amount ₹
To Stock		700	By Sales	4,800	
To Purchase	2,580		Less : Return Inwards	40	4,760
Less : Return Outward	100	2,480	By Closing Stock		1,530

To Carriage on Purchases	30		
To Wages	30		
To Profit & Loss A/c	3,050		
(Gross Profit transferred to P&L A/c)			
Total ₹	6,290	Total ₹	6,290

Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 2010

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Insurance	40	By Trading A/c	3,050
To Rent & Rates	50		
To Carriage on Sales	15		
To Salaries	180		
To Commission	70		
To Discount	20		
To Capital A/c	2,675		
(Net Profit transferred to Capital A/c)			
Total ₹	3,050	Total ₹	3,050

Balance Sheet as on 31st March 2010

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		600	Cash Balance	700
Bill Payable		200	Cash at Bank	1,300
Loan		480	Bill Receivable	300
Capital	2,525		Debtors	1,250
Add : Net Profit	2,675	5,200	Stock	1,530
			Plant & Machinery	1,400
	Total ₹	6,480	Total ₹	6,480

संचालन लाभ (Operating Profit)

वह लाभ जो व्यवसाय की सामान्य व्यावसायिक क्रियाओं से अर्जित किया जाता है। सकल लाभ (Gross Profit) में से संचालन व्यय (Operating Expenses) घटा दिये जाते है। संचालन व्यय उन व्ययो को कहते है। जो कि व्यवसाय की मुख्य अथवा सामान्य क्रियाओ से सम्बन्धित होते है। इनमे कार्यालय एवं प्रशासनिक व्यय, विक्रय एवं वितरण व्यय, कटौती, डूबत ऋण इत्यादि सम्मलित होते है। संचालन लाभ को ब्याज तथा कर से पूर्व आय (Earning before interest & tax) भी कहा जा सकता है।

Operating Profit = Net Profit + Non Operating Expenses – Non Operating Income

उदाहरण (Illustration) 10 : निम्नलिखित शेषो से 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता बनाते हुए संचालन लाभ ज्ञात कीजिये। (From the following blances, prepare Trading Account, Profit & Loss Account to find out operating Profit)

Name of Ledger Account	L.F.	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
रोकड़ (Cash Account)		1,000	—
पूंजी (Capital Account)		—	12,000
बैंक (Bank Account)		5,000	
विक्रय (Sales Account)		—	1,25,000
मजदूरी (Wages Account)		8,000	—
लेनदार (Creditors Account)		—	15,000
वेतन (Salary Account)		25,000	—
ऋण (Loan)		—	5000
फर्नीचर (Furniture)		15,000	—
लाभांष प्राप्त (Dividend Received)		—	5000
भवन का किराया (Building Rent)		13,000	—
देनदार (Debtors Account)		15,500	—
डूबत ऋण (Baddebts Account)		4,500	—
क्रय (Purchase Account)		75,000	—
		1,62,000	1,62,000

Trading Account and Profit and Loss Account
for the year ending 31st March 2010

Dr. Cr.

Particular	Amount ₹	Particular	Amount ₹
To Purchase	75,000	By Sales	1,25,000
To Wages	8,000	By Closing Stock	15,000
To Gross Profit (Balancing Figure)	57,000		
Total	1,40,000	Total	1,40,000
To Salary	25,000	By Gross Profit	57,000
To Rent	13,000	By Dividend Received	5,000
To Bad Debts	4,500		
To Net Profit (Transferred to Capital A/c)	19,500		
Total ₹	62,000	Total ₹	62,000

Operating Profit = Net Profit + Non Operating Expenses – Non Operating Income

Operating Profit = 19,500 – 5,000 = 14,500 ₹

व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता और स्थिति विवरण मे अन्तर –

क्रम सख्या	आधार	व्यापार एवं लाभ हानि खाता	चिट्ठा
1.	आवश्यकता	व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता निश्चित अवधि की क्रियाओं का परिणाम की जानकारी प्राप्त करने के लिए बनाया जाता है।	स्थिति विवरण संस्था की अवधि आर्थिक स्थिति की एक निश्चित दिन की जानकारी प्राप्त करने के लिए बनाया जाता है।

2.	खातों के शेष	इसमें अवास्तविक खातों का शेष लिखा जाता है।	इसमें व्यक्तिगत एवं वस्तुगत खातों का शेष लिखा जाता है।
3.	पक्ष	इसमें नाम एवं जमा पक्ष होते है।	इसमें सम्पत्तियाँ एवं दायित्व पक्ष होते है।
4.	क्रम	इसमें अवास्तविक खातों के शेषों का कोई निश्चित क्रम नहीं है।	इसमें सम्पत्तियों एवं दायित्वों को दिखाने के दो क्रम निश्चित है। (1) तरलता क्रम (2) स्थायी क्रम
5.	अन्तर की राशि	व्यापार खाते की अन्तर की राशि लाभ हानि में व लाभ हानि खाते की अन्तर की राशि पूंजी खाते में स्थानान्तरित होती है।	चिट्ठे का शेष नहीं होता है दोनों पक्षों का योग समान होता है।

स्वंय जाँचिए – 1

सत्य अथवा असत्य बतलाइये –

1. सकल लाभ को कुल आय कहते है।
2. व्यापारिक और लाभ व हानि खाते में प्रारम्भिक स्टॉक को नाम पक्ष मे रखा जाता है। क्योकि यह चालु वित्तिय वर्ष में विक्रय की लागत का एक भाग होती है।
3. किराया, दर, और कर प्रत्यक्ष व्ययो के उदाहरण है।
4. लाभ और हानि खाता के जमा पक्ष का कुल योग यदि नाम पक्ष के कुल योग से अधिक है तो अन्तर को शुद्व लाभ कहेंगें।

कॉलम (1) तथा कॉलम (2) को जोडिये

कॉलम (1)		कॉलम (2)
5. अन्तिम स्टॉक को जमा पक्ष मे दर्शाया जाता है।	अ	तलपट
6. खातो की शुद्वता की जॉच होती है।	ब	व्यापारिक खाता
7. ग्राहक द्वारा भेजे गये माल की वापसी	स	जमा पत्र
8. वित्तिय स्थिति का निर्धारण होता है।	द	स्थिति विवरण
9. ग्राहक द्वारा माल वापसी पर विक्रेता भेजता है।	य	नाम पत्र

स्वंय जाँचिए – 2

निम्नलिखित प्रश्नो में से सही उत्तर को चुने :

(1) वित्तीय विवरण पत्र में सम्मिलित है।

(i) तलपट (ii) लाभ हानि खाता (iii) स्थिति विवरण (iv) व्यापार खाता

(v) (i), (ii) और (iii) (vi) (ii), (iii) और (iv) (vii) (iv), (ii) और (iii)

(2) लाभ व हानि खाते से ज्ञात निम्नलिखित लाभो को सही क्रम से चुने।

(i) संचालन लाभ, शुद्व लाभ, सकल लाभ

(ii) संचालन लाभ, सकल लाभ, शुद्व लाभ

(iii) सकल लाभ, संचालन लाभ, शुद्व लाभ

(iv) सकल लाभ, शुद्व लाभ, संचालन लाभ

(3) निम्नलिखित मे से सही को चुने :

(i) संचालन लाभ = संचालन आय – गैर संचालन व्यय – गैर संचालन आय

(ii) संचालन लाभ = शुद्व लाभ + गैर संचालन व्यय – गैर संचालन आय

(iii) गैर संचालन लाभ = शुद्व लाभ – गैर संचालन व्यय – गैर संचालन आय

(iv) गैर संचालन लाभ = शुद्व लाभ – गैर संचालन व्यय + गैर संचालन आय

स्वंय जाँचिए – 3

(1) व्यापार की आर्थिक स्थिति एवं लाभ हानि की जानकारी प्राप्त करने के लिए बनाये जाते है।

(अ) प्रारम्भिक जर्नल (ब) सहायक बहियॉ (स) अन्तिम खाते (द) खाता बही ( )

(2) सकल लाभ/हानि ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

(अ) तलपट (ब) व्यापार खाता (स) लाभ हानि खाता (द) चिठ्ठा ( )

(3) व्यापार खाते का नाम पक्ष का योग 10,520 ₹ व जमा पक्ष का योग 12,000 ₹ अन्तर की राशि कहलाती है।

(अ) सकल लाभ (ब) शुद्व लाभ (स) शुद्व हानि (द) सकल हानि ( )

(4) प्रत्यक्ष व्यय का लेखा किया जाता है।

(अ) चिट्ठे मे (ब) लाभ हानि खाते मे

(स) व्यापार खाते के जमा पक्ष में (द) व्यापार खाते के नाम पक्ष मे ( )

(5) निम्नलिखित मे से अप्रत्यक्ष व्यय नही है।

(अ) मजदूरी (ब) कमीशन (स) पोस्टेज (द) वेतन ( )

(6) वर्ष के अन्त में रहतिया अन्तिम खाते बनाते समय दिखाया जाता है।

(अ) व्यापार खाते के जमा पक्ष एवं चिट्ठे के सम्पति पक्ष में

(ब) व्यापार खाते के नाम पक्ष एवं चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष मे

(स) व्यापार खाते के जमा पक्ष एवं चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में

(द) केवल लाभ हानि खाते में ( )

(7) शुद्व लाभ को स्थानान्तरित किया जाता है।

(अ) व्यापार खाते मे (ब) क्रय खाते मे (स) नकद खाते मे (द) पूंजी खाते में ( )

(8) लाभ हानि खाते में 500 ₹ वेतन का लेखा नही किया गया और शुद्व हानि 2,300 ₹ हुई है। अगर वेतन का लेखा किया जाता तो शुद्व हानि या लाभ होता है।

(अ) लाभ 1800 ₹ (ब) हानि 1800 ₹ (स) लाभ 2800 ₹ (द) हानि 2800 ₹ ( )

(9) व्यापार खाते मे 500 ₹ क्रय वापसी का लेखा नही किया गया इस अशुद्वि के सुधार का सकल लाभ पर प्रभाव पड़ेगा।

(अ) सकल लाभ कम होगा (ब) सकल लाभ ज्यादा होगा

(स) सकल लाभ पर कोई प्रभाव नही होगा (द) उपरोक्त मे से कोई नही। ( )

(10) रहतिये का मूल्यांकन किया जाता है।

(अ) बाजार मूल्य पर (ब) लागत मूल्य पर

(स) लागत मूल्य या बाजार मूल्य में से जो कम हो (द) लागत मूल्य या बाजार मूल्य में से जो ज्यादा हो। ( )

(11) निम्नलिखित ऑकड़े एक व्यापारी से सम्बन्धित है। रहतिया (प्रारम्भिक) 18,000 ₹ रहतिया (अन्तिम) 5,000 ₹ क्रय 40,000 ₹. यदि माल लागत पर 25 प्रतिषत लाभ की दर से विक्रय किया जाता है। तो विक्रय की राषि होगी।

(अ) 66,250 ₹ (ब) 17,000 ₹ (स) 45,000 ₹ (द) 58,000 ₹ ( )

(12) वर्ष के शुरू का रहतिया 60,000 ₹ कुल क्रय 1,50,000 ₹ विक्रय किये गये माल की लागत 1,80,000 ₹ एवं विक्रय 2,30,000 ₹ है। तो कुल लाभ या हानि की राषि होगी।

(अ) 90,000 ₹ लाभ (ब) 1,50,000 ₹ लाभ

(स) 50,000 ₹. लाभ (द) 50,000 ₹ हानि ( )

(13) संदिग्ध दायित्व दिखाया जाता है।

(अ) सम्पति पक्ष मे (ब) दायित्व पक्ष में

(स) व्यापार खाते में (द) चिट्ठे के नीचे टिप्पणी के रूप मे ( )

(14) निम्न में से स्थायी सम्पत्ति है –

(अ) नकद शेष (ब) बैंक में जमा शेष (स) रहतिया (द) मशीनरी ( )

(15) निम्न में से अर्मूत सम्पत्ति है –

(अ) ख्याति (ब) लेनदार (स) फर्नीचर (द) प्राप्य बिल ( )

स्वंय जाँचिए – 4

निम्नलिखित मदों को तरलता के आधार पर स्थिति विवरण में दर्षाये।

दायित्व	सम्पत्तियॉ
दीर्घकालीन ऋण	भवन
बैंक अधिविकर्ष	हस्तस्थ रोकड़
देय विपत्र	बैंक मे जमा रोकड़
पूँजी	प्राप्य विपत्र
अल्पकालीन ऋण	विविध देनदार
विविध लेनदार	भूमि
	अन्तिम रहतियॉ
	मशीनरी
	मोटर–कार
	फर्नीचर

सारां[illegible]ा

व्यापारी व्यापार के व्यवहारो का लेखा सर्वप्रथम प्रारम्भिक बहियो में करता है। फिर उसकी खतौनी खाताबही में करता है। इसके पश्चात् खातो का शेष निकालकर उसकी सहायता से तलपट बनाता है। तलपट खतौनी की गणितिय शुद्वता की जॉच होती है। परन्तु वांछित परिणाम की जानकारी प्राप्त नही की जा सकती । वांछित परिणाम की जानकारी के लिए उसे तलपट की सहायता से अन्तिम खाते बनाने आवश्यक होते है। अन्तिम खाते दोहरा लेखा प्रणाली की अन्तिम अवस्था (सारांश) है। जिन्हे वित्तिय विवरण–पत्र कहा जाता है। व्यापारी वित्तिय वर्ष के अन्त में तलपट की सहायता से निम्नलिखित वित्तिय–विवरण पत्र बनाता है। व्यापार खाता (Trading Account), लाभ हानि खाता (Profit & Loss Account) व चिट्ठा (Balance Sheet) बनाता है। वित्तिय–विवरण पत्रो से प्राप्त सूचनाओ से व्यापार की योजना और नियंन्त्रण तथा उसके प्रबन्ध में सहायक होती है। वित्तिय विवरण लेनदार, शेयर होल्डर, प्रतिष्ठान के कर्मचारियो के लिए भी उपयोगी होता है।

व्यापार खाते से व्यापार के सकल लाभ (Gross Profit) या सकल हानि (Gross Loss) की जानकारी होती है। इस खाते से ज्ञात सकल लाभ को लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष में तथा यदि सकल हानि हो

तो उसे लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में लिख देते है। लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में आयगत व्यय और हानियो को लिखते है। तथा जमा पक्ष में आयगत प्राप्तियो को लिखकर शुद्व लाभ (Net Profit) या शुद्व हानि (Net Loss) को ज्ञात करते है। लाभ–हानि खाते से ज्ञात शुद्व लाभ या शुद्व हानि को पूॅजी खाते में हस्तान्तरित करते है।

यह व्यापार की परिसम्पतियो तथा दायित्वो को दर्शाने वाला एक विवरण है। यह व्यापार की आर्थिक स्थिति को बताता है। स्थिति–विवरण पत्र अन्तिम खाते का एक भाग है। परन्तु यह खाता नही है। यह केवल एक विवरण है। स्थिति–विवरण में सम्पत्तियो का योग हमेशा दायित्व के बराबर होता है। स्थिति–विवरण में सम्पत्तियो व दायित्वो को तरलता क्रम, स्थिरता क्रम व शीर्ष रूप (Vartical form) मे दिखाया जाता है।

अभ्यासार्थ प्र□न :

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions) :

(1) पूॅजी खाते में जोड़ा जाता है –

(अ) आहरण (ब) बैंक अधिविकर्ष

(स) आयकर (द) शुद्व लाभ ( )

(2) वर्ष के अन्त का रहतिया तलपट में दिखाये जाने पर वह अन्तिम खातो मे दिखाया जायेगा।

(अ) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में (ब) व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में

(स) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में (द) लाभ–हानि के डेबिट पक्ष में ( )

(3) लाभ–हानि खाते का डेबिट पक्ष का योग 8,950 ₹ एवं क्रेडिट पक्षा का योग 5,950 ₹ है तो अन्तर की राशि होगी।

(अ) 3,000 ₹ का शुद्व लाभ (ब) 3,000 ₹ शुद्व हानि

(स) 3,000 ₹ सकल लाभ (द) 5,950 ₹ शुद्व हानि ( )

(4) क्रय खाते मे 6,000 ₹ के स्थान पर 6,600 ₹ लिख दिये गये इससे व्यापार खाते मे क्या और कितनी राशि का प्रभाव होगा।

(अ) 600 ₹ सें सकल लाभ कम होगा

(ब) 600 ₹ से सकल लाभ बढेगा।

(स) 1,600 ₹ से सकल हानि बढेगी।

(द) 6,000 ₹ से सकल लाभ बढेगा। ( )

(5) ''विक्रय गाड़ी भाड़ा'' अन्तिम खातों मे दिखाया जायेगा।

(अ) व्यापारिक खाते के नाम पक्ष मे (ब) व्यापारिक खाते के जमा पक्ष में

(स) लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष मे (द) लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष मे ( )

(मा.शि.बो.राज. 1987)

(6) अन्तिम खाते तैयार किये जाते है।

(अ) 31 मार्च को (ब) 31 दिसम्बर को

(स) 30 जून को (द) व्यापारिक वर्ष के अन्त में ( )

(मा.शि.बो.राज. 1986)

(7) 5,000 ₹ के भुगतान का एक वाद न्यायालय में विचारधीन है। यह व्यापार के लिए है।

(अ) स्थायी दायित्व (ब) कृत्रिम दायित्व

(स) संदिग्ध दायित्व (द) चालू दायित्व ( )

(मा.शि.बो.राज. 1985)

(8) पूँजी खाते शेष में जोड़ा जाता है।

(अ)	सकल लाभ	(ब)	सकल हानि	
(स)	आहरण	(द)	शुद्ध लाभ	( )

(मा.शि.बो.राज. 1983)

(9) निम्न में से प्रत्यक्ष व्यय है।–

(अ)	वेतन	(ब)	व्यापारिक व्यय	
(स)	गाड़ी भाड़ा	(द)	कार्यालय खर्च	( )

(मा.शि.बो.राज. 1983)

(10) निम्न मदो में कौनसी मद व्यापार का दायित्व है –

(अ)	आहरण	(ब)	बैंक अधिविकर्ष	
(स)	विनियोग	(द)	रहतिया	( )

(मा.शि.बो.राज. 1982)

(11) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में प्रारम्भिक पूँजी शेष में से घटाया जाता है।

(अ)	सकल लाभ	(ब)	आहरण	
(स)	शुद्ध लाभ	(द)	सकल हानि	( )

(मा.शि.बो.राज. 1977)

अति लघुउत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Question) :

1. व्यापार खाता क्या प्रदर्शित करता है?
2. अन्तिम खाते कब बनाये जाते है?
3. सम्पत्तियो एवं दायित्वो को लिखने के क्रमो के नाम दीजिए?
4. खर्चे कितने प्रकार के होते है?
5. अर्मूत सम्पत्तियो के दो उदाहरण दीजिए?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Question) :

1. तलपट एवं चिट्ठे में कोई चार अन्तर दीजिए।
2. सम्पत्तियो को तरलता क्रम दीजिए।
3. दायित्वो को स्थायित्व क्रम में दीजिए।
4. निम्नलिखित सम्पत्तियो को स्थायित्व क्रम में लिखिए।

(1) बैंक शेष	(2) रहतिया	(3) भवन	(4) नकद शेष
(5) मशीनरी	(6) ख्याति	(7) प्राप्य बिल	(8) देनदार
(9) पेटेन्ट	(10) फर्नीचर		

5. वर्ष के दौरान माल का क्रय 75,000 ₹ और विक्रय 1,00,000 ₹ थे सकल लाभ की दर विक्रय मूल्य पर 20 प्रतिशत है। वर्ष के अन्त मे रहतिया 10,000 ₹ था। वर्ष के प्रारम्भ में रहतिये का मूल्य ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 15,000 ₹) (मा.शि.बो.राज. 1989)

(10) चालू वर्ष में भुनाये गये विपत्रो को जिनकी भुगतान तिथि तुरन्त आगामी वर्ष में पड़ती है। अन्तिम खाते में किस प्रकार दिखाया जायेगा। (मा.शि.बो.राज. 1980)

निबन्धात्मक प्रश्न (Eassy Type Question) :

1. अन्तिम खातों से आप क्या समझते है? इसके महत्व को समझाइये?

2. व्यापार खातें एवं लाभ–हानि खाते तथा चिट्ठे में अन्तर बताइये?
3. चिट्ठा किसे कहते है ? चिट्ठे को तरलता क्रम एवं स्थायित्व क्रम काल्पनिक उदाहरण देकर बनाइये?

आंकिक प्र�न (Numerical Question) :

Q 1. एक तलपट मे से निम्न विवरण दिये हुए हैं तलपट 31 मार्च 2010 को बनाया गया है। इन विवरणो की सहायता से 31 मार्च 2010 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता बनाइये। (Following particular are given from a Trial Balance. It was prepared on 31st March 2010 Prepare Trading Account for the year ending 31st March 2010 with the help of above particular) :

	₹		₹
उत्पादन मजदूरी (Productive Wages)	20,000	1.4.2009 को रहतिया (Stock)	2,00,000
कस्टम ड्यूटी (Custom Duty)	5,000	क्रय (Purchases)	5,00,000
गाड़ी भाड़ा (Carriages)	2,000	विक्रय (Sales)	9,00,000
रेल भाड़ा (Railway Freight)	3,000	मजदूरी (Wages)	10,000
31.03.2010 को रहतिया (Stock)	3,50,000	क्रय वापसी (Purchases Return)	30,000

उत्तर : सकल लाभ : 5,40,000 ₹

Q 2. निम्नलिखित विवरणो से शर्मा एण्ड क. का लाभ हानि खाता 31 मार्च 2010 को समाप्त वर्ष का बनाइये। (From the following Particulars Prepare Profit & Loss Account of Sharma & Cop. For the year ending 31st March 2010) :

	₹		₹
जावक गाड़ी भाड़ा (Carriages Out ward)	2,000	सकल लाभ (Gross Profit)	1,00,000
अनुउत्पादक मजदूरी (Unproductive Wages)	2,500	वेतन (Salary)	30,000
कमीशन (Commission)	1,000	बट्टा जमा (Discount Credit)	5,000
अंकेक्षण शुल्क (Audit Fees)	3,200	स्टेशनरी (Stationery)	4,000
सामान्य खर्चे (General Expenses)	10,000	ब्याज (Interest)	3,000

उत्तर : शुद्व लाभ : 49,300 ₹

Q 3. निम्नलिखित सूचनाओं से 31 मार्च 2010 को एक व्यापारी का चिट्ठा (तरलता क्रम में) बनाइये। (From the following information prepare a Balance Sheet (In Liquidity order) of a Trader as on 31st March 2010)

	₹		₹
देय बिल (Bill Payble)	1,000	ख्याति (Good will)	10,000
देनदार (Debtors)	5,000	रहतिय (Stock)	3,500
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	1,500	लेनदार (Creditors)	1,800
पूॅजी (Capital)	49,000	बैंक ऋण (Bank Loan)	4,000
भूमि (Land)	20,000	विनियोग (Investment)	3,000
फर्नीचर (Furniture)	4,000	शुद्व लाभ (Net Profit)	2,700
आहरण (Drawings)	1,500	नकद शेष (Cash Balance)	13,000

उत्तर : चिट्ठे का योग 58,500 ₹

Q 4. मैसर्स आत्माराम एण्ड सन्स की लेखा पुस्तको से प्राप्त निम्नलिखित शेषो से दिनांक 31 दिसम्बर 1981 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये। (From the following balance extracted from the books of Messers Atmaram & Sons on 31st December 1981 Prepare Trading and Profit & Loss Account and Balance Sheet)

	₹		₹
रहतिया (Stock)	9,600	देनदार (Debtors)	4,400
मजदूरी व वेतन (Wages & Salaries)	3,200	पूॅजी (Capital)	5,000
कमीशन (डेबिट) (Commission Debit)	100	आहरण (Drawing)	650
भाड़ा (Fright)	300	देय बिल (Bill Payble)	500
क्रय (Purchases)	11,850	लेनदार (Creditors)	2,330
विक्रय (Sales)	24,900	ऋण (Loan)	900
व्यापारिक व्यय (Trading Expenses)	20	यंत्र (Plant)	2,200
प्राप्य बिल (Bill Receivable)	600	मरम्मत (Repair)	160
कर व बीमा (Taxes & Insurance)	350		
किराया (Rent)	200		

31.12.1981 को रहतिया का मूल्य (Stock Valued at Rs. 3,500)

उत्तर : सकल लाभ (G.P.) 3,450 ₹ शुद्ध लाभ (N. P.) 2,620 ₹ चिट्ठे का योग (B/S) 10700 ₹

Q 5. श्री रामनारायण एण्ड सन्स की पुस्तको से 31 मार्च 1994 को निम्न तलपट बनाया गया था। (The Following Trial Balances was prepared in the books of Shri Ramnarayan & Sons as on 31st March 1994)

Name of Ledger Account	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
आहरण एवं पूजी (Drawing & Capital)	5,000	1,00,000
क्रय व विक्रय (Purchases and Sales)	68,000	1,50,000
देनदार (Debtor)	40,000	—
रहतिया (Stock)	30,000	—
आवक वापसी (Return Inward)	3,000	—
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	—	12,000
वेतन (Salaries)	17,000	—
कार्यालय ताप एवं रोशनी (Office Heating & Lighting)	2,000	—
पट्टे पर जायदाद (Lease hold Property)	80,000	—
कमीशन प्राप्त (Commision Received)	—	2,000
यात्रा व्यय (Travelling Expenses)	3,000	—
छपाई व लेखन सामग्री (Printing & Stationery)	1,000	—
फर्नीचर (Furniture)	9,000	—
सादिग्ध ऋण आयोजन (Provision for Doubutful Debts)	—	4,000
मजदूरी व भाड़ा (Wages & Freight)	10,000	—
योग (Total)	2,68,000	2,68,000

31.03.1994 को रहतिया 15,000 ₹ पर मूल्यांकित किया गया (Stock Valued at Rs. 15,000) 31 मार्च 1994 को समाप्त हाने वाले वर्ष का व्यापार खाता लाभ–हानि तथा उसी तिथि को चिट्ठा बनाइयें (Prepare Trading Account, Profit & Loss Account for the year ending 31st March 1994)

उत्तर : सकल लाभ (G.P.) 54,000 ₹ शुद्व लाभ (N. P.) 33,000 ₹ चिट्ठे का योग (Balance Sheet Total) 1,40,000 ₹ (मा.शि.बो.राज. 1995)

Q 6. श्री अरूण खण्डेलवाल का 31 मार्च 2010 को तलपट निम्नलिखित था (The following was the Trial Balance of Shri Arun Khandelwal as on 31st March 2010)

Name of Ledger Account	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
वेतन व मजदूरी (Salaries & Wages)	8,780	—
गाड़ी भाड़ा (Carriages & Wages)	4,220	—
क्रय व विक्रय (Purchases and Sales)	79,550	1,00,000
वापसी (Return)	655	—
रोकड़ हस्ते (Cash in Hand)	9,235	—
बट्टा (Discount)	110	—
देनदार व लेनदार (Debtor & Creditors)	32,180	10,000
विक्रय पर रेलभाड़ा (Railway Freight on Sales)	310	—
पूंजी एवं आहरण (Capital & Drawing)	1,630	90,000
कार खर्चा (Car Expenses)	2,000	—
कर व बीमा (Taxes & Insurance)	170	—
बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	—	1,000
स्टेशनरी (Stationery)	225	—
भूमि एवं भवन (Land & Building)	40,000	—
संयत्र एवं मशीनरी (Plant & Machinery)	12,000	—
फिक्सर एवं फिटिंग्स (Fixture & Fittings)	10,300	—
प्राप्य बिल एवं देय बिल (Bill Receivable and Bill Payble)	175	150
सुरेश को ऋण (Loan to Suresh)	15,000	—
सुरेश के ऋण पर ब्याज (Interest on Loan to Suresh)	—	2,350
किराया प्राप्त (Rent Received)	—	9,000
कमीशन (Commision)	200	—
निर्यात (Export Duty)	150	—
रॉयल्टी (Royalty)	430	—
वेयर हाउस व्यय (Warehousing Expenses)	180	—
एकत्रित बिक्री कर (Sales Tax Collected)	—	5,000
योग (Total)	2,17,500	2,17,500

31.03.2010 को रहतिया 78,600 ₹ था (Stock was Rs. 78,600) 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता लाभ–हानि तथा उसी तिथि को चिट्ठा बनाइयें (Prepare Trading Account, Profit & Loss Account for the year ending 31st March 2010)

उत्तर : सकल लाभ (G.P.) 93,745 ₹ शुद्व लाभ (N. P.) 92,970 ₹ चिट्ठे का योग (B/S) 1,97,490 ₹

Q 7. 31 दिसम्बर 1993 को श्री प्रतीक की पुस्तको से निम्नलिखित शेष प्राप्त किये गये है। (The following balance have been extracted from the books of Shri Pratik as on 31st December 1993) :

	₹		₹
रहतिया (Stock)	34,000	देय बिल (Bill Payble)	12,000
क्रय (Purchases)	3,70,000	बैक ऋण (Bank Loan)	20,000
विक्रय (Sales)	5,50,000	जावक वापसी (Return Outward)	2,000
विक्रय व्यय (Selling Expenses)	35,000	अग्नि बीमा प्रीमियम (Fire Insurance Premium)	2,000
सादिग्ध ऋण आयोजन (Provision for Doubutful Debts)	3,000	भवन (Building)	1,40,000
पूंजी (Capital)	2,50,000	देनदार (Debtors)	87,000
लेनदार (Creditors)	60,000	मषीनरी (Machinery)	1,00,000
आवक वापसी (Return Inward)	4,000	प्राप्य बिल (Bill Receivable)	25,000
कारखाना ईधन एवं शक्ति (Factory Fuel & Power)	16,000	डूबत ऋण (Bad Debts)	2,000
		आहरण (Drawing)	30,000
		रोकड़ हस्ते (Cash in Hand)	6,000
वेतन व मजदूरी (Salaries & Wages)	47,000		
बैक ऋण पर ब्याज (Interest on Bank Loan)	2,000		
कमीशन प्राप्त (Commission Received)	3,000		

अन्य सूचनाऐं – 31 दिसम्बर 1993 को स्टॉक (Stock in hand on 31st December 1993 was ₹ 49,400) उपर्युक्त सुचनाओ से व्यापारी वर्ष के अन्त में व्यापारिक खाता, लाभ–हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा बनाइये। (From the above information prepar Trading Account, Profit & Loss Account at the end o year and Balance Sheet as on the date) (मा.शि.बो.राज. 1994)

उत्तर : सकल लाभ (G.P.) 1,77,400 ₹ शुद्व लाभ (N.P.) 92,400 ₹ चिट्ठे का योग (B/S) 4,07,400 ₹

Q 8. निम्नलिखित तलपट की सहायता से 31 मार्च 1995 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता तथा उसी तिथि का चिट्ठा बनाइये। (From the following Trial Balance of a trader, prepare Trading and Profit & Loss Account for the year ending 31st March 1995 and Balance Sheet as on that date) :

Name of Ledger Account	Debit Amount ₹	Credit Amount ₹
पूंजी (Capital)	—	60,000
ऋण (15 प्रतिषत प्रतिवर्ष) 1 जनवरी 1995 (Loan 15% Premium 1 Jan. 1995	—	10,000
कमीशन (Commision)	—	600
सादिग्ध ऋण आयोजन (Provision for Doubutful Debts)	—	1,000
क्रय व विक्रय (Purchases and Sales)	80,000	1,50,000
वापसी (Return)	5,000	2,000
ऋणी एवं ऋणदाता (Debtors and Creditors)	50,000	30,000
आहरण (Drawing)	10,000	—
फर्नीचर (Furniture)	5,000	—
मशीनरी (Machinery)	30,000	—
रहतिया (Stock)	20,000	—

चुंगी (Octori)	5,000	—
आयात कर (Import Duty)	2,000	—
वेतन एवं मजदूरी (Salaries & Wages)	20,000	—
डूबत ऋण (Bad Debts)	500	—
किराया दर व कर (Rent, Rates & Taxes)	4,000	—
जीवन बीमा निगम(Life Insrance Premium)	2,000	—
ऋण पर ब्याज (Interest on Loan)	200	—
रोकड़ (Cash)	19,900	—
योग (Total)	2,53,600	2,53,600

31 मार्च को रहतिया (Stock ₹ 20,000) (मा.शि.बो.राज. 1996)

उत्तर : सकल लाभ (G.P.) 60,000 ₹ शुद्ध लाभ (N.P.) 35,900 ₹ चिट्ठे का योग (B/S) 1,23,900 ₹

उत्तर तालिका

स्वयं जांचिये – 1 (1) असत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) ब (6) अ (7) य (8) द (9) स

स्वयं जांचिये – 2 (1) (vi) (2) (iii) (3) (ii)

स्वयं जांचिये – 3 (1) स (2) ब (3) अ (4) द (5) अ (6) अ (7) द (8) द (9) ब (10) स (11) अ (12) स (13) द (14) द (15) अ

बहुचयनात्मक प्रश्न – (1) द (2) स (3) ब (4) अ (5) द (6) द (7) स (8) द (9) स (10) ब (11) ब